



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. म १२५१ विषय वैदिक

नाव श्रीशुक्ल यजुर्वेदस्थ ब्रह्मभाष्य (मुद्रित)

लेखक / लिपीकार म।सि.क

पृष्ठ १४ काळ सप्टेम्बर १८८६ पूर्ण / अपूर्ण

श्रीशुक्लयजुर्वेदस्य

ब्रह्मभाष्यम्

श्रीभार्गव ज्ञान्ता प्रसाद शर्मणा निर्मितम्

प्रतपय सायन महीधरादि भाष्य प्रमाणैः संयुक्तम् संस्कृतार्थ-
भाषाभ्यां समन्वितम्

तृतीयवर्षका

सितंबर

अंक ४

सन १८८६ ई०

हरिश्चन्द्रसम्बन्ध

अगता

सत्यप्रकाशयज्ञान्ययमुहल्याकचहरीयाट गालीकासवी में-

श्रीमद्वैदिकसङ्घर्षसभाके सभासदोंकी
सम्मतिसे मुद्रित हुआ

वार्षिकसूच्य ॥

अपि मनोकावर महसूलसहित पञ्चालमहसूलसहित
संस्कृत भाषा भाष्य भाष्यदेनों संस्कृत भाषा देनों-

३।३ ३।३ ६।३ ५।३ १०।३

अस्य ग्रंथस्याधिकारः श्रीमत्सङ्घर्षसभायाः सभायाः सर्वथा स्वाधीन
एवरीक्षितः

यह ग्रंथ सन १८६७ ई० के २५ एप्रिल के २८ व २९ दफ्ता के अनुसार रजि-
स्ट्री कि जायाया

वैदिक सभाके नियम ॥१७॥

८१) वेद भाष्य विना वार्षिक मूल्य प्राये कि सीको न दिया जायगा ॥

८२) जो महाशय नमूने के वास्ते अंक मंगलें उनको दोन्य है कि संस्कृत भाषा दीर्घ के लिये ७॥ और केवल संस्कृत वा भाषा के अर्थ ७॥ भेज दे अन्यथा नमूना नहीं भेजा जावेगा ॥

८३) जो महाशय नवीन ग्राहक हों उनको उचित है कि यदि वे संस्कृत और भाषा दोनों प्रकारका भाष्य लिखा चाहें १८३ और जो केवल भाषा अथवा संस्कृत लेना भीष्ट हो तो १८३ तीन वर्ष का मूल्य महसूल सहित मनी आर्डर के द्वारा भेज दे अथवे लघु पेश विल मंगलें अन्यथा अंक नहीं भेजे जावेंगे ॥

८४) जो महाशय वैदिक सभाके सभासद अथवा सहायक हैं उनकी आत्मा पर रंत अंक भेज दिये जावेंगे परंतु उनको अनुग्रह पूर्वक ग्राहकों का रुपया भेजना होगा ॥

८५) जो महाशय दश ग्राहक उद्यत करके सभाकी सहायता करेंगे उनको एव प्रति विना मूल्य दी जायगी ॥

सूचना

विदित हो कि यजुर्वेदकी चालीसों अध्याय का भाष्य तैयार हो गया केवल छपन वाकी है जिनका ह्राशयो^{पि}षि^{पि}छला रुपया वाकी है वैपि छला और तीसरे वर्ष का मूल्य इस अंक के पहुँचने पर तुरंत भेज दें और शेष महाशय तीसरे वर्ष का मूल्य ह्राशयो^{पि}षि^{पि}छला रुपया वाकी भी श्रोचें कि यह शुभकार्य कैसे परिष्कृत और व्यर्थ होना है और कोई मासिक चंदा इनके व्यय के अर्थ निश्चित नहीं है भाष्य का मूल्य ही इसका अवलंब है अत एव मूल्य के देरमें अनेसे कितनी हानि हो सकती है हमारे वृत्तसे ग्राहक ऐसे हैं जिन्होंने वर्ष के अग्रम पर ही रुपया भेज दिया केवल ई २ महाशय ऐसे हैं जिन्होंने अवतक इस धर्म पथकी और दृष्टि नहीं की अब हम आशा करते हैं कि वे महाशय तीसरे वर्ष तक अपना हिस्सा वसा कर देंगे और हमको वाचित करेंगे ॥

चंदा देने वालों के नाम

श्रीभानुमुंशी देवी सिंह जी रईस आसोड़ा जिला मेरठ

श्रीभानुवावरा मद्याल जी ग्राम्मी और सिधर काम्पटी सीधी ०

सं। वेद^८। ब्रह्म^९तः। सूर्य^{१०}स्य। जनि^{११}त्रम^{१२}। वेद^{१३}। चन्द्र^{१४}मसम^{१५}। वेद^{१६}।
अथ। यतो जा^{१७}। ॥ ६०॥

ओं वेदाहमित्यस्य (प्रजापति ऋषिः। शार्वाङ्गिषु पृच्छन्दः। उद्गाता ब्रह्मणो दे०)
पदार्थः - ब्रह्मा उत्तर देगा है १२ स २ ब्रह्मांड के कारण को ४ में ५ जानता हं
६। एषि वी स्वर्ग ७ और अन्नरिक्ष को ८ जानता हं ९ ब्रह्म १० सूर्य के ११ उत्प-
त्ति कारण को १२ जानता हं १३ चन्द्रमा को १४ जानता हं १५ फिर १६ जिस
से वे उत्पन्न हुए १७ उस ब्रह्म को भी जानता हं ॥ ६०॥

पृच्छामि^१ त्वं परमन्तम^२ एषि^३ व्याः पृच्छामि^४ यत्र भु-
वनस्य नाभिः। पृच्छामि^५ त्वं वृषाणो^६ अश्वस्य^७ रेतः। पृ-
च्छामि^८ त्वं वाचः परमव्योम^९ ॥ ६१॥

एषि^१ व्याः। परमं। अन्तम^२। त्वं। पृच्छामि^३। यत्र। भुवनस्य ना-
भिः। पृच्छामि^४। वृषाः। अश्वस्य^५। रेतः। त्वं। पृच्छामि^६। वाचः।
परमं। व्योमं। पृच्छामि^७ ॥ ६१॥

ओं पृच्छामीत्यस्य (प्रजापति ऋषिः। निच दाषी निहु पृच्छन्दः। यजमानोऽध्वर्युदे०)
पदार्थः - यजमान अध्वर्यु से पूछता है हे अध्वर्यु या हे ज्ञान चक्षु १ एषि
वी के २ अश्वधिरूप अन्न को ४ में तुभ से ५ पूछता हं ६ जिस स्थल में ७ भुव-
न का ८ कारण है ९ उस को भी पूछता हं १० सींचने वाले ११ सूर्य के १२ वीर्य-
को १३ तुभ से १४ पूछता हं १५ वाणी के १६ उक्ता १७ स्थान को १८ तुभ
से पूछता हं ॥ ६१॥

इयं वेदिः परे^१ अन्तः। एषि^२ व्या अयं यत्रो^३ भुवनस्य^४
नाभिः। अयं सोमो^५ वृषाणो^६ अश्वस्य^७ रेतः। ब्रह्मायं वा-
चः परमव्योम^८ ॥ ६२॥
इमम^९। वेदिः। एषि^{१०} व्याः। परः। अन्तः। अयमं। यत्रो^{११} भुवनस्य^{१२}।

नाभिः। दृष्टाः^{१०}। अथ^{११}स्य। रेतः^{१२}। अथ^{१३}म। सोमः^{१४}। अथ^{१५}म। ब्रह्मा^{१६}।
वाचः^{१७}। परमं^{१८}। व्योमं^{१९}॥ ६३॥

जें इयमित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः ब्राह्म्युषिः क्वच्छन्दः यजमानोऽथर्वुदेवते) १
पदार्थः - अथर्वयजमान को उत्तर देता है १ यह २ उत्तर वेदी वागगान मंड-
ल ३ पाथिवी वा देह की ४, ५ अन्त सीमा है ६ यह ७ यज्ञ वा यज्ञ पुरुष ८ भुवर्ग
कार्दकारण है १० सींचने वाले ११ सूर्य वा मानस सूर्य का १२ वीर्य १३ यह १४ सो-
म वा आत्म प्रतिविंब है १५ यह १६ ब्रह्मा नाम क्मत्विज वा मन १७ वेद बचन १८
उक्त १९ स्थान है ॥ ६३॥ ब्रह्मोद्यसमास ऊभ्रा ॥

सुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन्तर्म हृत्य एवे। दधेह गर्भं
सुत्वि यं यतो जातः प्रजापतिः ॥ ६३॥

ह। प्रथमः^१। सुभूः^२। स्वयम्भूः^३। महति। अणवे। अन्तः^४। क्त्वि-
यम्। गर्भम्। दधे^५। यतः^६। प्रजापतिः^७। जातः^८॥ ६३॥

अथर्वयुज्जहरी पात्र में प्रजापत्य महिमानामग्रह को ग्रहण करता है।
जें सुभूरित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः लिङ्गोक्त देवता) १

पदार्थः - अक्षिद्र है कि २ सब की आदि ३ विभ्वके उभादक ४ अपनी इ-
च्छासे प्रादुर्भूत महानारायण ने ५, ६ ब्रह्मांशु रूप समुद्र के ७ मध्य ८ प्रा-
त काल ९ ब्रह्मांड रूप गर्भ को १० स्थापित किया ११ जिस ब्रह्मांड रूप गर्भ
से १२ ब्रह्माजी १३ उत्पन्न हुआ ॥ ६३॥

होता यक्षत्प्रजापति २० सोमस्य महिन्नः। जुषता।

मिषवतु सोम २० होत र्यज ६४

होतौ। महिन्नः^१। सोमस्य। प्रजापतिम्। यक्षत्^२। सोमम्। जुष-
ताम्। पिबतु। होतः^३। यज^४॥ ६४॥

जें होतैत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः विराट् प्रजापत्या निष्टुप् छन्दः प्रजापतिर्देव) १

पदार्थः- १ वाक्नेर^२ महिमनाम^३ आत्म प्रति विंव से सम्बन्ध ररवने वाले
४ प्रजापति को भू पूजा वह पूजित प्रजापति ६ आत्म प्रति विंव को ७ सेवन
करो ८ श्चोर पान करो ९ हे मानुष होता तुमभी १० यजन करो ॥ ६४ ॥

प्रजापतेन त्व देता न्ययो विश्वो रूपाणि परिणा वंभु
व । यत्का मास्ते जुहू मस्तन्नेश्चस्तु वय ७२ स्याम्
पते योरयी एणाम् ॥ ६५ ॥

यह पूर्व महिमा का याज्या नाम मंत्र है इसकी व्याख्या (१०, २० में होगई)
इति श्री भृगु वंशावतंस श्री नाथुराम सुनुज्वाला प्रसाद शर्म कर्ते यजुर्वेदी
य ब्रह्म भाष्ये त्रयो विंशोऽध्यायः ॥

ओं श्री गणेशाय नमो नमः ॐ नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् देवी
सरस्वती व्यासं ततो जयमुदीरयेत् १ अथ मेध मे २१ दूष होते हैं उनमें
मध्यम दूष अग्नि पुनाम है उसके पास १७ पशु नि योजनीय हैं उनको
उनके देवता सहित कहते हैं ॥

अथ वस्तुपुरोगो मुगस्ते प्राजापत्याः कृष्णा ग्रीवश्च
ने योर राते पुरस्तात्सारस्वती मेध्वस्तो ह्रन्वोर
श्चिना वधो रामो वालोः सोमा पोषाः प्रयामो नाभ्या
सोर्ध यामो श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वा द्वौ लो
मशसं कथोसकथेर्धोर्वायव्यः चेतः पुच्छ इन्द्रो य

स्वपस्या वेहर्द्वेषावो वामनः ॥ १ ॥

अथः १ तूपरः १ गोमुगः १ तो १ माजा १ पत्याः १ आग्नेयः १ कृष्णा ग्री
वः १ पुरस्तात् १ राते १ हन्वोः १ अथ स्तान् १ सारस्वती १ मेधी १
श्चिनी १ वधो रामो १ वालोः १ सोमा पोषाः १ प्रयामः १ नाभ्याम्
श्चोर्ध्वो १ यामो १ श्वेतश्च १ कृष्णश्च १ पार्श्वयोः १ त्वा द्वौ १ लोमशसं
चेतः १ च १ कृष्णः १ सोर्ध यामो १ पार्श्वयोः १ त्वा द्वौ १ लोमशसं

कथी॥ सकथी॥ वायव्यः॥ अवेनः॥ पुच्छे॥ स्वपस्थाया॥ इन्द्राया॥
वेहते॥ वेषावो॥ वामनः॥ १॥

अंश्च इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः अरिकसंज्ञानिष्टदः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः - १ अश्च २ अद्भुत की उत्पत्ति के काल में भी अद्भुत हीन पशु ३ ग.
वय ४ वेदीनों ५ प्रजापति को देवता रखने वाले हैं उनको मंत्र से बांधे ६ जिन
का देवता अग्नि है उस ७ प्रयाम वर्ण वाले अज को ८ घोड़े के आगे ९ ल-
लाट के निकट बांधे १० हनु के ११ नीचे १२ सरस्वती को देवता रखने वाली
१३ मेघी को बांधे १४ जिन का देवता अश्विनी कुमार हैं वे १५ अथोभाग में शु-
क्ल वर्ण दीशज १६ अश्च की भुजा के निकट बांधने चाहिये १७ सोम और पु-
षा को देवता रखने वाला १८ शुक्ल कष्म रोम वाला अज १९ नाभि के निक-
ट बांधे २० अवेन २१ और २२ कषा पशु २३ सूर्य यम को देवता रखने वाले हैं
२४ वे घोड़े के पार्श्व में बांधने चाहिये २५ जुहा जिन का देवता है वे २६ बहरो
म युक्त पुच्छ वाले पशु २७ उरु के पश्चात् बांधने चाहिये २८ वायु जिस का
देवता है वह २९ अवेन वर्ण पशु ३० घोड़े के पिछले भाग में बांधना चाहिये
३१, ३२ शुभ कर्मा इन्द्र के लिये ३३ गर्भ धातिनी ३४ विष्णु सम्बंधी ३५ क-
मना पशु बांधना चाहिये ॥ १॥

अथाध्यात्मम् - १ राजसीमानस सूर्य २ शुद्धि शान्त में तत्पर सा-
त्विक मानस सूर्य ३ इन्द्रियों का अन्वेषक तामसी मानस सूर्य ४ वेधव-
त्स को देवता रखने वाले हैं ५ ब्रह्माग्नि जिस का देवता है वह ७ रुद्र रूप प्रा-
ण मानस सूर्य के आगे ८ ललाट में बांधन योग्य है १०, ११ हनु के नीचे १२ स-
रस्वती को देवता रखने वाली १३ माया को अन्तरावने वाली वाक् बन्धन यो-
ग्य है १४ अश्विनी कुमार जिन को देवता हैं वे १५ नासा छिद्र १६ मानस सू-
र्य की भुजा की ओर बांधन योग्य हैं १७ सोम और पूषा जिस का देवता है वह

१८ मन १९ विष्णु के स्थान नाभि में वं धन योग्य है २० धर्म २१ श्रेर २२ अ धर्म
२३ स्वर्ध श्रेर यम को देवता ररवने वाले दोनो २४ मानस स्वर्ध के पार्श्व में वं धन
योग्य है २५ तुष्टा जिन का देवता है वे २६ लिंग श्रेर अंड को २७ उरु में वं
धन योग्य है २८ वायु जिस का देवता है वह २९ अपान ३० मूल चक्र पर वं
धन योग्य है ३१, ३२ शुभ कर्म महानारायण के लिये ३३ ब्रह्मांड रूप
गर्भ की नाशक बुद्धि ३४ श्रेर विष्णु भक्त ३५ कामासुर का वचं क मन वं
धन योग्य है ॥ १॥

रोहितो धूमरोहितः कर्केन्दु रोहितस्ते सौम्या वभु
रुणवभुः शुक्रवभुस्ते वारुणाः शितिरन्ध्रो न्यतः
शितिरन्ध्रः समन्तः शितिरन्ध्रस्ते सावित्राः शिति
वाह्रन्धतः शिति वाह्रः समन्तः शिति वाह्रस्ते वाह्र
स्यत्याः पृषती क्षुद्र पृषती स्थूल पृषती ता मेत्रा

वरुणयः ॥ ३ ॥

रोहितः १ धूम रोहितः २ कर्केन्दु रोहितः ३ तो ४ सौम्याः ५ वभुः ६ अ
रुणवभुः ७ शुक्रवभुः ८ तो ९ वारुणाः १० शितिरन्ध्रः ११ अन्धतः १२ शि
ति रुन्ध्रः १३ समन्तः १४ शितिरन्ध्रः १५ एते १६ सावित्राः १७ शिति वाह्रः १८
अन्धतः १९ शिति वाह्रः २० समन्तः २१ शिति वाह्रः २२ एते २३ वाह्र स्थत्याः
२४ पृषती २५ क्षुद्र पृषती २६ स्थूल पृषती २७ ताः २८ मेत्रा वरुणयः २९ ॥ ३ ॥
ओं रोहित इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः निवृत्त संकति षष्ठ्यन्दः द्रव्यं देवतम्) १
पदार्थः - १ सर्वरक्त २ धूम वर्ण से मिश्ररक्त ३ वदर समान रक्त ४ वैनी
नों पशु ५ सोम को देवता ररवने वाले हैं ६ कपिल वर्ण ७ अरुण वर्ण से मिश्र
कपिल ८ शुक्र पक्षी की समान वर्ण वाला कपिल ९ वे नीनों पशु १० वरुण को
देवता ररवने वाले हैं ११ कृष्ण रन्ध्र वाला १२, १३ एक पार्श्व में कृष्ण रन्ध्र वा

ला १४, १५ सव शोर कषा रंधर रवने वाले १६ ये नीनों १७ सविना को देवता-
 रवने वाले हैं १८ श्वेत पांव वाला १९, २० एक पाश्व में श्वेत पांव वाला २१, २२
 सव श्वेत पांव वाला २३ वे नीनों पशु २४ वह स्पति को देवता रवने वाले हैं वे म
 ध्याम दूध के निकट नियोज्य हैं २५ विचित्र वर्ण विन्दु से युक्त शरीर वाली-
 २६ क्षुद्रमाविचित्र विन्दु से युक्त २७ स्थूल विचित्र विन्दु से युक्त २८ वे नीनों
 २९ मित्रवरुण को देवता रवने वाले हैं द्वितीय दूध के निकट नियोज्य हैं ॥ ३॥
 श्रुया ध्यात्मम् - १ मानसमुद्र में स्थित सात्विक मन रूप मत्स्य २ त
 म प्रधान मन ३ रजः प्रधान मन ४ वेध चन्द्रमा को देवता रवने वाले हैं ६ स-
 त्व प्रधान मानसाग्नि ७ रज प्रधान मानसाग्नि ८ तम प्रधान मानसाग्नि ९
 वे १० ईश को देवता रवने वाले हैं ११ श्वेत वर्ण शिव वा विष्णु में जीवात्मा-
 नि को धारण करने वाली महावाक् अहं ब्रह्मा स्मि नाम १२ गुरु से प्राप्त १३
 तत्त्व नासि नाम महावाक् १४, १५ सर्व शोर से प्राप्त सर्व रत्न विदं ब्रह्म ने हन्ता-
 नास्ति किञ्चिन्न यह महावाक् १६ वे १७ मन को देवता रवने वाली हैं १८-
 जिसका कर्म कारण आनंद स्वरूप जीवात्मा है वह ज्ञान १९, २० गुरु से प्रा-
 तज्ञान २१, २२ सव शोर से प्राप्त परिपूर्ण ज्ञान २३ वे २४ गुरु को देवता रव-
 ने वाले हैं २५ प्राण वाहन सात्विकी बुद्धि २६ तम प्रधान बुद्धि २७ रज प्रधान
 बुद्धि २८ वे २९ प्राण उदान को देवता रवने वाली हैं ॥ ३॥

मुद्ग्वालः सर्वमुद्ग्वालो मणि वालस्तथाश्वि
 नाः श्वेताः श्वेताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये
 कर्णायामाश्ववलिता रोद्रानभोरूपाः पार्जन्याः ३
 मुद्ग्वालः । सर्वमुद्ग्वालः । मणि मुद्ग्वालः । ते । आश्विनाः । श्वे-
 तः । श्वेताक्षः । श्वरुणः । ते । पशुपतये । रुद्राय । कर्णः । यामा-
 श्ववलिताः । रोद्राः । नभोरूपाः । पार्जन्याः ॥ ३॥

ओं शुद्ध बाल इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः जगती छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १

पदार्थः - १ शुभ्र केश बाला २ सवशुभ्र केश बाला ३ मणि वर्ण केश बाला ४ वेतीनो पशु ५ अश्विनी कुभार को देवता ररवने वाले हैं ६ वे दूसरे दूध के निकट नियोज्य हैं ७ अश्वेन वर्ण ८ रक्त वर्ण ९ वे १०, ११ पशु पति रुद्र को देवता ररवने हैं १२ चन्द्रसमान अश्वेन कान बाले तीन पशु १३ यम देवता ररवने वाले हैं १४ सगर्व तीन पशु १५ रुद्र को देवता ररवने वाले हैं वे सब दूसरे दूध के निकट नियोज्य हैं १६ आकाश की समान नील वर्ण तीन पशु १७ पर्जन्य को देवता ररवने वाले हैं ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् - १ शुद्ध बल का बाल क आत्म प्रति विं व २ आत्मा ३ ओष्ठ बाल क ईश्वर ४ वे ५ नर नारायण को देवता ररवने वाले हैं ६ अश्वेन वर्ण समान बाल यु ७ इन्द्र नील प्रती काश प्राण ८ संख्या के बाल की समान वर्ण बाला अपमान ९ वे १०, ११ पशु पति रुद्र अर्थात् समष्टि प्राण को देवता ररवने वाले हैं १२ देह वक्ष अर्थात् स्थूल सूक्ष्म कारण शरीर १३ यम को देवता ररवने वाले हैं १४ ग विं त प्राण १५ रुद्र देवता वाले हैं १६ आकाश रूप इन्द्रिय गोल क १७ पर्जन्य देवता वाले हैं ॥ ३ ॥

पुञ्जितिरश्वीनं पुञ्जित् रुध्वं पुञ्जित् स्नेमा रुताः प्र
ल्युर्लोहितोर्णी पलक्षीताः सारस्वत्यः ल्मीहा कर्णः
शुण्डा कर्णो ह्यालोह कर्णस्ते त्वाशः कृष्णा ग्रीवः
शितिकक्षोर्ज्जित्सकृषस्तर्णेन्द्राग्नाः कृष्णा जिह्वर
त्पाञ्जित् मुहूर्ज्जित् स्तुर्धुस्याः ॥ ४ ॥

पुञ्जितः १ तिरश्वीनं पुञ्जितः २ ऊर्ध्वं पुञ्जितः ३ तौ भारुताः ४ फल्यु
लोहितोर्णी ५ पलक्ष्मी ६ ताः ७ सारस्वत्यः ८ ल्मीहा कर्णः ९ शुण्डा
कर्णः १० अह्यालोह कर्णः ११ तौ त्वाशः १२ कृष्णा ग्रीवः १३ शितिकक्षः

अग्निं सुकथः^{१८}। ते। ऐन्द्राग्नाः।^{२०} कृष्णाग्निः।^{२१} अल्पाग्निः।^{२३} महा
ग्निः। ते। उषस्याः॥ ४॥

ओं षां निरित्यस्य (प्रजापति ऋषिः विराट् धृति ष्वन्तः द्रव्यं देवतम्) १
पदार्थः - १ विचित्रवर्णं २ निरश्वीनविन्दुवाला ३ ऊर्ध्वविन्दुवाला ४
वेपथु ५ मरुत देवतावाले हैं तीसरे दूषनिकटनियोजनीय हैं ६ अणुह शरी
रवाली ७ रक्तरोमवाली ८ श्वेतवर्णवाली स्त्री पशु ९ वे १० सरस्वती देवतावा
ली हैं ११ कानभेली १२ शोणररवनेवाली १३ छोटे कानवाली १३ रक्तवर्ण
कानवाली १४ वे नीनों १५ तुष्टा को देवता रखनेवाली हैं तीसरे दूषनिकटनि
योज्य हैं १६ कृष्णगलेवाला १७ श्वेतकक्षवाला १८ उरुपरपुण्ड्रररवनेवा
ला १९ वे नीनों २० इन्द्राग्नि को देवता रखने हैं तीसरे दूषनिकटनियोज्य हैं
२१ कृष्णपुण्ड्रवाला २२ छोटे पुण्ड्रवाला २३ बड़े पुण्ड्रवाला २४ वे २५ उ
षा देवतावाले चोथे दूषनिकटनियोज्य हैं ॥ ४ ॥

इथ या ध्यात्मम् - १ प्राणरश्मि २ अयानरश्मि ३ उदानरश्मि ४ वे ५ मरु
त देवतावाली हैं ६ तामसी मिथ्यावाक् ७ जिससे रजो गुणी मन जाट राग्नि श्रो
रज्ञान की प्राप्ति होती है वह राजसी वाक् ८ सर्वपालक विष्णु जिसका ल
स्य है वह सान्त्विकी वाक् ९ वे नीनों १० सरस्वती देवतावाली हैं ११ कानत
क संसार रोग से ग्रस्त राजसी चक्षु १२ कानतक शुद्ध सान्त्विकी चक्षु १३
कानतक तामसी चक्षु १४ वे नीनों १५ तुष्टा देवतावाले हैं १६ जप के मध्य
विष्णु ही जिसकी यीर्वा में है वह जीवात्मा १७ श्वेतवर्ण शिव ही सहायता
के लिये जिसके पार्श्व भाग में है वह भक्त १८ सूर्यरूप ब्रह्मा जिसके चिन्त में
है वह भक्त १९ वे २० महाविष्णु श्रोत्र ब्रह्माग्नि को देवता रखनेवाले हैं २१
कृष्णरात्रि जिसका चिन्ह है वह पितृयान २२ सूर्यम सूर्यप्रकाश जिसका
चिन्ह है वह देवयान २३ ब्रह्मनेत्र जिसका चिन्ह है वह ब्रह्मयान २४ वे नीनों

२५ उषा देवता बाले हैं ॥ ४ ॥

शिल्पा वैश्व देव्यो रोहिण्यस्त्रवयो वार्चो विज्ञाना
 अदित्ये सरूपा धात्रे वत्सतर्षा देवानाम्पत्नीभ्यः ५
 शिल्पाः । वैश्व देव्यः । रोहिण्यः । अत्रयः । वार्चः । आविज्ञानाः ।
 अदित्ये । सरूपाः । धात्रे । वत्सतर्षाः । देवानाम् । पत्नीभ्यः ॥ ५ ॥
 ओशिल्पा इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः निचहृहनी छन्दः - द्रव्यं देवतम्) १
 पदार्थः - १ विचित्रवर्णं तीनस्त्रीपशु २ विश्वे देवा को देवता ररवने बाली
 हैं ३ रक्तवर्ण ४ डेढ़वर्ष की आयु बाली तीन अज्ञा ५ वाक् देवता बाली हैं ६ कृ
 ष्ण गीव आदि चिन्ह विज्ञान से भ्रून्य तीन पशु ७ अदिति को देवता ररवने बाले
 हैं ८ समान रूप बाले तीन पशु ९ धाता को देवता ररवने बाले हैं १० तीन बाल
 व्यागी ११, १२ देवपत्नियों को देवता ररवने बाली हैं पांचवें दूष निकट नियो
 ज्य हैं ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् शक्तिचक्र कला आदि कर्म रूप मन की वृत्तियां २ विश्वे देवा
 को देवता ररवने बाली हैं ३ तीनों शरीर भे व्यास ४ बुद्धि वृत्तियां ५ वाक् देवता
 ररवने बाली हैं ६ ब्रह्म विज्ञान से भ्रून्य इन्द्रिय गोलक ७ षाधिनी को देवता
 ररवने बाले हैं ८ विष्णु रूप प्राण ९ धाता को देवता ररवने बाले हैं १० इन्द्रि
 यशक्तियां ११, १२ देवपत्नियों को देवता ररवने बाली हैं ॥ ५ ॥

कृष्ण ग्रीवा अग्नेयाः शितिभ्रवो वत्सना १० रोहि
 ता रुद्राणां ११ अवेता अवरो किशो आदित्या नान

भोरूपाः पार्जन्याः ६ ४

कृष्ण ग्रीवाः । अग्नेयाः । शितिभ्रवः । वत्सनाम् । रोहिताः ।
 रुद्राणां । अवेताः । अवरो किनः । आदित्या नाम । नभोरूपाः
 पार्जन्याः ॥ ६ ॥

ओं कषा ग्रीवा इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः विराट् ब्रह्मणी छंदः द्रव्यं देवनम्) १
 पदार्थः - १ काले कंठ वाले तीन पशु जो हैं २ उन का देवता अग्नि है ३ अचे
 न वर्गों में से युक्त जो तीन पशु हैं ४ उनके देवता वसु हैं ५ रक्त वर्गों जो नी
 न पशु हैं ६ उन का देवता रुद्र है ७ अचेन वर्गों ८ देखने वाले जो तीन पशु
 हैं ९ उनके देवता आदित्य हैं पांचवे यूप नि कट नियोजनीय हैं १० आकाश
 वर्गों जो तीन पशु हैं ११ उन का देवता पर्जन्य है ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् - १ जप के मध्य श्री कषा ही जिन की ग्रीवा में स्थित है २
 उन भक्तों का देवता ब्रह्माग्नि है ३ शुक्ल वर्गों शिव अथेय रूप से जिन के भू
 मध्य विराजमान हैं ४ उन भक्तों के देवता वसु हैं ५ सूर्य की उपासना से जो
 भक्त तन्मय हैं ६ उन के देवता रुद्र हैं ७ शुद्ध सत्व मय ८ ब्रह्म जिन का
 अथेय है ९ उन का देवता सूर्य है १० कमला काश में नाना रूप धारी जो
 योगी हैं ११ उन का देवता अमृताधिकारी पर्जन्य देवता है ॥ ६ ॥

उन्नतऋषभो वा मनस्तरेन्दुर्वैष्णवा उन्नतः
 शिनि वाहः शिनि एष्टस्तरेन्द्रा वाहस्मृत्याः शुर्क
 रूपा वाजिनोः कल्माषा आनि मारुताः प्रयाभाः

पौष्णाः ॥ ७ ॥

उन्नतः १ ऋषभः २ वामनः ३ तौ ४ रेन्दुर्वैष्णावाः ५ उन्नतः ६ शि
 नि वाहः ७ शिनि एष्टः ८ तौ ९ रेन्द्रा वाहस्मृत्याः १० शुर्क ११ रूपाः १२
 वाजिनोः १३ कल्माषा १४ आनि मारुताः १५ प्रयाभाः १६ पौष्णाः १७
 ओं उन्नतऋषभ इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः अतिजगती छन्दः द्रव्यं देवनं) १
 पदार्थः - १ ऊँचा २ एष्ट ३ वड़ी आधु में भी वृद्धि रहित ४ वे पशु जो हैं ५
 उनके देवता इन्द्र विष्णु हैं ६ ऊँचा ७ अचेन पूर्व पाद वाला ८ अचेन एष्ट वा
 ला ९ वे तीनो जो पशु हैं १० उनके देवता इन्द्र वह स्पति हैं ११ शुर्क पक्षी

समानवर्णित्वेनीनपशुजो है १२ उनका देवतावाजी है १३ कर्तुरवर्णित्वेनीनपशु है १४ उनके देवताशनिवायु है १५ शुक्लकृष्णवर्णित्वेनीनपशु है १६ उनका देवतापूषा है ॥७॥

अथाध्यात्मम् - १ जीवनमुक्त २ समाधिस्थ ३ आह्वयजो है ४, ५ उनके देवतामहानारायण और विष्णु है ६ सब संस्कारों से उच्चता को प्राप्त ७ शुद्ध सत्वगुणसे कार्य करने वाला ८ सत्वगुणमें आश्रय करने वाले जो जीवात्मा है ९, १० उनके देवताविष्णु और विराट् पुरुष है ११ त्रिदेवभावप्रत्यक्ष करने वाले भक्तों के शरीर जो है १२ उनका देवताप्रधान है १३ पंचदेवताओं के भाव को प्राप्त करने वाले भक्तों के जो शरीर है १४ उनके देवताशनि और वायु है १५ भक्तिसे श्री कृष्णभाव को प्राप्त करने वाले जीवात्मा जो है १६ उनका देवतासूर्य है ॥ ७॥

एता एन्द्रागनादिरूपाश्चनीषोमीयावामनाश्चन
द्वाहश्चागनावैष्णवावशाभैत्रावरुणद्यौन्यत एन्यो
भैत्र्यः ॥ ८ ॥

एताः १ ऐन्द्रागनाः २ दिरूपाः ३ चनीषोमीयाः ४ वामनाः ५ चन
द्वाहः ६ आगनावैष्णवाः ७ वशाः ८ भैत्रावरुणयः ९ अन्यतः १० एन्यो
भैत्र्यः ११ ८ ॥

जो एता इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः विराट् ब्रह्मनी छन्दः द्रव्यं देवनम्) १
पदार्थः - १ कर्तुरवर्णित्वेनीनपशुजो है २ उनके देवता इन्द्राग्नि है ३ दीवर्णित्वेनीनपशुजो है ४ उनके देवता शनि सोम है ५ वामन ६ चनद्वाहनाम
तीनपशुजो है ७ उनके देवताशनि विष्णु है ८ द्रव्यमीनश्चाजो है ९ उनके देव
तामित्रवरुण है वे सातवें दूषणिकटनियोजनीय है १०, ११ एक पार्श्वमें क
र्तुरवर्णित्वेनीनश्चाजो है १२ उनका देवतामित्र है ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - १ विष्णुभावको प्राप्तजीवात्माजो हैं २ उनके देव-
नामहानारायण और ब्रह्मानि हैं ३ जो द्वैतमत्तबलभी हैं ४ उनके देवता
प्रकृतिगुरुष हैं ५ जो विषयासक्तमन ६ देहाभिमानी हैं ७ उनके देवतानर
नारायण हैं ८ जो जितेन्द्रिय हैं ९ उनके देवता प्राण उदान हैं १०, ११ जो गुरु
द्वारा विष्णु भाव को प्राप्त हैं १२ उनका देवता सूर्य है ॥ ८ ॥

कृष्णाग्नीवाश्रानेयावभुवः सोम्याः प्रचेतावाय
व्या अविज्ञाना अदित्ये सरूपा धात्रे वत्सतयो

देवानामपत्नीभ्यः । ९ ॥

कृष्णाग्नीवाः १ आग्नेयाः १ वभुवः १ सोम्याः १ प्रचेताः १ वायव्याः
अविज्ञानाः १ अदित्ये १ सरूपाः १ धात्रे १ वत्सतयो १ देवपत्नीभ्यः ९
ओं कृष्णाग्नीवा इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः निचत्संक्तिश्छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १
पदार्थः - १ जो श्यामग्नीवा बाले तीन पशु हैं २ उनका देवता अग्नि है ३ जो
कपिलवर्ण तीन पशु हैं ४ उनका देवता सोम है ५ जो श्वेतवर्ण तीन पशु हैं ६
उनका देवता वायु है ७ चिन्ह विशेष से अविज्ञान जो तीन पशु हैं ८ उनकी दे
वता अदिति है ९ समान रूप बाले जो तीन पशु हैं १० उनका देवता धाता है ११
जो तीन बाल छागी हैं १२ उनकी देवता देवपत्नी हैं ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम् - १ जो श्री कृष्ण के जपमें तनर हैं २ उनका देवता ब्र-
ह्मानि है ३ जो प्राण को भूमध्यचढ़ते हैं ४ उनके देवता शिव पार्वती हैं ५ जो
सत्व प्रधान हैं उनका देवता प्राण है ७ जो ब्रह्म विज्ञान से भ्रूय इन्द्रिय गोल
क हैं ८ उनकी देवता षाधित्री है ९ जो देहाभिमानी हैं १० उनका देवता धाता है
११ जो इन्द्रियशक्ति हैं १२ उनकी देवता देवपत्नी हैं ॥ ९ ॥

कृष्णाभो माधुमाश्रान्तिरिक्षावृहन्नो दिव्याः । १
वत्सवैद्युताः सिध्मास्तारकाः ॥ १० ॥

कृष्णाः^१ भोमो^२। धूम्रुः^३। अन्तरिक्षाः^४। वहन्तः^५। दिव्याः^६। श्रव-
त्ताः^७। वेद्युताः^८। सिध्माः^९। तारकोः^{१०}॥१०॥

ओं कृष्णा इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः निचुदार्षी वहनी छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १
पदार्थः - १ जो कृष्णवर्णीनीन पशु हैं २ उन की देवता भूमि है ३ जो धूम्रव-
र्णीनीन पशु हैं ४ उन का देवता अन्नरिक्ष है ५ जो महान्तीनीन पशु हैं ६ उन-
का देवता स्वर्ग है ७ वेनवमे धूप के नि कट नियोज्य हैं ८ जो कवुर वर्णीनीन पशु
हैं ९ उन का देवता विजली है १० जो सिध्मनाम रोग वाले नीन पशु हैं १० उन-
के देवता नक्षत्र हैं ॥ १०॥

अथाध्यात्मम् - १ जो तामसी प्राणात्मा जीव हैं २ उनकी देवता भू-
मि है ३ जो राजसी प्राण पापयुक्त जीव हैं ४ उन का देवता अन्तरिक्ष है ५
जो महान्न भक्त सात्विकी जन हैं ६ उन का देवता स्वर्ग है ७ जो शमरूप व-
त्तरवने वाले हैं ८ उन की देवता योग सम्बन्धी विजली है ९ ब्रह्माग्नि में
अहं ब्रह्मास्मि नामाजिन का शब्द है १० उनके देवता तारकमंत्र हैं ॥ १०॥

धूम्रान्वसन्नाद्यालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णा-
न्वर्षाभ्यो रुणञ्छरदेष्वतो हेमन्ताय पिशाङ्गा-
न्निच्छाशिराय ॥ ११॥

१ धूम्रान् २ वसन्ताय ३ आलभते ४ श्वेतान् ५ ग्रीष्माय ६ कृष्णा-
न्वर्षाभ्यः ७ अरुणान् ८ शरद ९ एषतः १० हेमन्ताय ११ पिशाङ्गान्
निच्छाशिराय ॥ ११॥

ओं धूम्रानित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः विण्दृहणी छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १
पदार्थः - १ धूम्रवर्णीनीन अन्न को २ वसन्त के लिये ३ नियुक्त करना है
४ श्वेतवर्णीनीन पशु को ५ ग्रीष्म के लिये ६ कृष्णवर्णीनीन पशु को ७ वर्षा-
ऋतु के लिये ८ रक्तवर्णीनीन पशु को ९ शरदऋतु के लिये १० जाना वर्ण-

विन्दुसे युक्तनीनपशुको ११ हेमंत ऋतु के लिये १२ रक्तमिश्र कपिलवर्णिनीन
पशुको १३ शिशिर ऋतु के लिये नियुक्त करता है ॥ ११ ॥

अथ ध्यात्मम् - १ माणवृत्तियों को २ प्रजापति के अंगभूत वसन्त के
लिये ३ नियुक्त करता है ४ गोदुग्धसमानाकार समान वृत्तियों को ५ प्रजाप-
ति के अंगभूत शीष्म के लिये ६ विषयासक्ति से कृष्णवर्ण इन्द्रियों को ७ प्र-
जापति के अंगभूत वर्षा के लिये ८ विजलीसमान वर्णवाली उदान वृत्तियों
को ९ प्रजापति के अंगभूत शरद ऋतु के लिये १० सेकयुक्त व्यान वृत्तियों के
११ प्रजापति के अंगभूत हेमंत ऋतु के लिये १२ संध्या के बादल समान-
वर्णवाली अप्रान वृत्तियों को १३ प्रजापति के अंग शिशिर ऋतु के लिये
नियुक्त करता है ॥ ११ ॥

अथ योगायुज्यै पञ्चावयस्विष्टभुभेदित्यवाहो
जगत्येविवत्सा अनुष्टुभे तु र्यवाह उषिा है ॥ ११ ॥
अवयः । गायज्यैः । पञ्चावयः । त्रिष्टुभे । दित्यवाहः । जगत्ये ।
विवत्साः । अनुष्टुभे । तु र्यवाहः । उषिा है ॥ १२ ॥

ओं अवय इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः भुरिगात्मी त्रिष्टुप् छन्दः द्रव्यं देवतम्) १
पदार्थः - इन्द्रवर्ष की आशुवाले नीनपशु २ गायत्री देवी के लिये ३ ऋद्धि
वर्ष की आशुवाले नीनपशु ४ त्रिष्टुप् छन्दाभिमानि देवता के लिये ५ गाय-
हवें दूषनिकट नियुक्त करै ६ दो वर्ष की आशुवाले नीनपशु ७ जगती छ-
न्दाभिमानि देवता के लिये ८ तीन वर्ष की आशुवाले नीनपशु ९ अनुष्टुप्-
छन्दाभिमानि देवता के लिये १० साहेनीन वर्ष की आशुवाले नीनपशु १०
उषिा क छन्दाभिमानि देवता के लिये नियुक्त करता है ॥ १२ ॥

अथ ध्यात्मम् - १ मनहृदयभृकुटिरूप लोको की रक्षक माणव
१२ समहि माण के लिये ३ पंचगोलकों की रक्षक तानोन्दि यां ४ आत्मा

केलिये ५ ब्रह्मदान योग्यमल की धारण करने वाली श्रवण दत्ति यां ६ सम-
हि श्रवण के लिये ७ प्राण उदान व्यान जिसके वत्स हैं वह वाक् ८ समहि
वाक् के लिये ९ गीन लोक के चोथे ब्रह्म को प्राप्त कराने वाली चक्षु दत्ति-
यां १० समहि चक्षु के लिये नियुक्त करता है ॥ १२ ॥

पृष्ठवाहो विराज उक्षाणो वहत्या ऋषभाः क-
कुभेनुद्वाहः पङ्क्त्यै धेनवो निच्छदसे १३
पृष्ठवाहः १ विराजो उक्षाणो १ वहत्या १ ऋषभाः १ ककुभे १ श-
नुद्वाहः १ पङ्क्त्यै १ धेनवः १ श्रति च्छन्दसे ॥ १३ ॥

ओं पृष्ठवाह इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः निचदनुहृष्ट च्छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १
पदार्थः - स्वारवर्ष की श्रायु वाले गीन पशु २ विराट् च्छन्दा भिमानी देव-
ता के लिये ३ सेचन समर्थ युवान गीन पशु ४ वहनी च्छन्दा भिमानी देवता-
के लिये ५ पूर्व से श्राधिक श्रायु वाले गीन पशु ६ ककुप् च्छन्दा भिमानी-
देवता के लिये ७ शकट ले च्चलने में समर्थ गीन पशु ८ श्रति च्छन्दा भिम-
नी देवता के लिये नियुक्त करता है ॥ १३ ॥

अथाध्यात्मम् - १ देहभार को धारण करने वाला श्रोत्र गीन गुणों
से विविध भूतात्मा २ विराट् पुरुष के लिये ३ इन्द्रिय सेचन समर्थ मनो ह-
स्ति यां ४ समहि मन के लिये ५ प्राण ६ समहि प्राण के लिये ७ श्वाकाश-
श्रोत्र शब्द को धारण करने वाली श्रोत्र दत्ति यां १० समहि श्रोत्र के लिये
९ बुद्धि दत्ति यां १० योग लक्ष्मी के लिये नियुक्त करता है ॥ १३ ॥

कृष्ण ग्रीवा श्रवणे यावभुवः सोम्या उपध्व-
स्ताः सा विजावत्सतयुः सारस्वत्युः शुभामाः
पौष्णाः एभ्नयो मारुता वरुणरूपा वैश्वदेवा
वशाद्या वा एधि वीर्याः १४

कृष्ण^१ ग्रीवाः। आग्नेयाः^२। वृधवः^३। सोम्याः^४। उपध्वस्ताः^५। सा
 वित्राः^६। वत्सतर्धुः^७। सारस्वत्यः। श्यामाः। पोषाणिः^८। एश्वनेयः।
 मारुताः^९। वज्ररूपाः। वैश्वदेवाः^{१०}। वशाः^{११}। द्यावापृथिवीयाः^{१२}। १४
 ओं कृष्ण ग्रीवा इत्यस्य (मजापति ऋषिः भुरिगति जगती छन्दः द्रव्यं देवतं) १
 पदार्थः - जो कृष्ण ग्रीव तीन पशु हैं २ उनका देवता अग्नि है ३ जो कर्षि
 न वर्ण तीन पशु हैं ४ उनका देवता सोम है ५ अधोपतन स्वभाव वाले वर्णान्ति
 र मिश्रित तीन पशु जो हैं ६ उनका देवता साविता है ७ जो वाल छागी तीन हैं
 ८ उनका देवता सरस्वती है ९ शुक्ल कृष्ण वर्ण तीन पशु जो हैं १० उनका देव
 ता पूषा है ११ जो विचित्र वर्ण तीन पशु हैं १२ उनके देवता मरुत हैं १३ जो
 वज्र रूप तीन पशु हैं १४ उनके देवता विश्वेदेवा हैं ये चोर्ध्वं द्युपनि कट नि
 युक्त होने चाहिये १५ जो वन्ध्या तीन पशु हैं १६ उनका देवता पृथिवी स्वर्ग^{१४} है
 अथाध्यात्मम् - १ जो श्री कृष्ण के जप में तत्पर हैं २ उनका देवता
 ब्रह्माग्नि है ३ भूमध्य प्राण धारण करने वाले जो योगी हैं ४ उनके देवता
 शिव पार्वती हैं ५ जो माया से मिश्रित हैं ६ उनका देवता साविता है ७ जिन्होंने
 वाग्दमन को प्राप्त नहीं किया ८ उनका देवता सरस्वती है ९ जो मनो वह्नि हैं
 १० उनका देवता पूषा है ११ जो आत्म ज्योतिरूप कमल स्थ स्वरूप हैं १२ उ
 नका देवता वायु है १३ जो अर्द्धज्ञान से रहित हैं १४ उनके देवता पृथिवी स्वर्ग^{१४} हैं
 वा हैं १५ जो मोक्ष फल रहित बुद्धि वह्नि यां हैं १६ उनके देवता पृथिवी स्वर्ग^{१४} हैं
 उक्ताः सञ्चरा एता ऐन्द्राग्नाः कृष्णा वारुणाः
 एश्वनेया मारुताः कायास्तुपराः ॥ १५ ॥
 सञ्चराः उक्ताः एताः ऐन्द्राग्नाः कृष्णाः वारुणाः एश्वनेयः
 मारुताः तुपराः कायाः ॥ १५ ॥
 ओ उक्ता इत्यस्य (मजापति ऋषिः भुरिगार्ची वहनी छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः १ कृष्ण ग्रीव आदि पन्द्रह पञ्च २ कहे ३ कर्तुर वणि जो तीन पञ्च है ४
उनका देवता इन्द्राग्नि है ५ कृष्ण वर्ण जो तीन पञ्च है ६ उनका देवता वरुण है ७
तनु शरीर तीन पञ्च जो है ८ उनका देवता मरुत है ९ जो निः प्रसङ्ग तीन पञ्च
हैं १० उनका देवता प्रजापति है ॥ १५ ॥

अथाध्यात्मम् - १ कृष्ण ग्रीव आदि पंचदश २ कहे ३ विष्णु को प्रा-
म जो जीव है ४ उनके देवता महानारायण श्रेय ब्रह्माग्नि है ५ जो नाम सीर्जा
व है उनका देवता वरुण है ७ जो आत्म ज्योति रूप कमलस्थ स्वरूप है ८
उनका देवता वायु है ९ श्रुद्धि शान्ति में तत्पर जीव जो हैं १० उनका देवता
ब्रह्म है ॥ १५ ॥

अनयेनी कवने प्रथम जाले भते मरुद्भ्यः सान्ना
पुनेभ्यः सवान्यान्मरुद्भ्यो गृह मोधिभ्यो वषिकहा
न्मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः स ११ स्तृष्टान्मरुद्भ्यः स्वतव

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

प्रथम ज्ञाना १ अनी कवने २ अन्नये ३ आलभते ४ सवान्या ५ न
सान्ना पुनेभ्यः १ मरुद्भ्यः २ वषिकहान् ३ गृह मोधिभ्यः ४ मरु-
द्भ्यः ५ संस्तृष्टान् ६ क्रीडिभ्यः ७ मरुद्भ्यः ८ अनुस्तृष्टान् ९ स्वत-
वद्भ्यः १० मरुद्भ्यः ॥ १६ ॥

जो अन्नय इत्यस्य (प्रजापति कर्तृभिः निवृच्छ करी छन्दः प्रव्यं देवतम्) १
पदार्थः - १ माता के प्रथम गर्भ में उत्पन्न तीन अजों को २ हवि ग्रहण ये
गय मुरव वाले ३ अग्नि के लिये ४ नियुक्त करता है ५ वायु मंडल में स्थित
तीन अजों को ६ सान्न पन नाम ७ मरुद्गणों के लिये ८ चिर प्रसून तीन अजों
को ९ गृह मैथी १० मरुद्गणों के लिये ११ सहस्र तीन अजों को १२, १३ क्री-
डा मान मरुद्गणों के लिये नियुक्त करता है १४ अनुक्रम से जन्मित तीन-

पशु को १५, १६ स्वतःवानमरुद्गणों के लिये नियुक्त करता है ॥ १६ ॥

अथ ध्यात्मम्— १ ध्यात्म प्रतिविंबों को २ लय योग्य मुरव वाले ३ ब्रह्मा
नि के लिये ४ नियुक्त करता है ५ प्राण शक्तियों को ६ इन्द्रिय शक्तियों के
प्रकाशक ७ समष्टि प्राणों के लिये नियुक्त करता है ८ चिरमसूतमन-
चिन्तवुद्धि अहंकारों को ९, १० समष्टि प्राणों के लिये नियुक्त करता है ११ स-
हस्रह ज्ञानेन्द्रियों को १२ अक्षमष्टि प्राणों के लिये नियुक्त करता है १४ पञ्चा-
त्सह कर्मेन्द्रियों को १५ रूपरस स्पर्श गन्ध नाम चार गुण वाले १६ सम-
ष्टि प्राणों के लिये नियुक्त करता है ॥

उक्तास्ते च रा एताः ऐन्द्रा गनाः प्राशुद्गना माहि

न्द्रा वद्गुरूपा वैश्व कर्माणाः १७

**सञ्चराः १ उक्ताः १ एताः १ ऐन्द्रा गनाः १ प्राशुद्गनाः १ माहिन्द्राः १ वद्ग-
रूपाः १ वैश्व कर्माणाः ॥ १७ ॥**

ओं उक्ता इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः भुरिगायत्री छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः— १ कृष्ण मीव आदि पञ्चदश पशु २ कहे जोकि अष्टादश द्यूष-
निकट युक्त होने हैं ३ जो कर्तुर वर्णिनीन पशु हैं ४ उनका देवता इन्द्रा निन हैं
५ प्रकृष्ट शृङ्ग से युक्त जो नीन पशु हैं ६ उनका देवता महेन्द्र है ७ जो वद्ग-
रूप नीन पशु हैं ८ उनका देवता विश्व कर्मा है ॥ १७ ॥

अथ ध्यात्मम्— १ कृष्ण मीव आदि पञ्चदश २ कहे ३ जो विष्णु भाव
को प्राप्त जीव हैं ४ उनके देवता नर नारायण हैं ५ मन भुक्ति हृदय नाम-
नीना शिरवर वाले जो प्राण हैं ६ उनका देवता महेन्द्र है ७ जो इन्द्रियां हैं ८
उनका देवता विश्व कर्मा है ॥ १७ ॥

**धुम्रावधुनी काशाः पितृणां ११ सोम वताम्बु
धुम्रा धुमनी काशाः पितृणां भवर्हिषदाङ्गुणा**

वधुनीकाशापितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाष्ट

षन्तस्त्रैयम्बकाः १८

धूम्राः^१। वधुनीकाशाः^२। सोमवतूनां^३। पितृणां^४। वधवः^५। धूमनीका
शाः^६। वहिषदां^७। पितृणां^८। कृष्णाः^९। वधुनीकाशाः^{१०}। अग्निष्वा-
त्तानाम्। पितृणाम्। कृष्णाः^{११}। एषन्तः^{१२}। त्रैयम्बिकाः^{१३}॥ १८॥

ओं धूम्रा इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः भुरिगतिजगती छन्दः द्रव्यं देवतम्) १
पदार्थः - पित्र्येहि के देवता पशुओं को कहने हैं १ कृष्ण वर्ण मिश्रित र-
क्त वर्ण पशु २ कापिल वर्ण नील पशु ३, ४ सोमवत पितरों के लिये नियोज्य हैं
५ कापिल वर्ण ६, धूम्र वर्ण ७, ८ वहिषद पितरों के लिये उन्नीस वे यूप निक-
ट नियोज्य हैं ९ कृष्ण वर्ण १० कापिल वर्ण सदृश पशु ११, १२ अग्निष्वात्त पि-
तरों के लिये नियोज्य हैं १३ कृष्ण वर्ण १४ विन्दु युक्त जो पशु हैं १५ उनका दे-
वता अम्बक है ॥ १८ ॥

अथ ध्यात्मात्मम - १ रजोगुण प्रधान २ कापिल वर्ण व्यष्टि मनो वृत्ति ३, ४
रजोगुण प्रधान समष्टि मनो वृत्तियों के लिये नियोज्य हैं ५ सत्व प्रधान ६
व्यष्टि मनो वृत्ति यां ७, ८ सत्व प्रधान समष्टि मनो वृत्तियों के लिये नियोज्य हैं
९ तम प्रधान १० व्यष्टि मनो वृत्ति यां ११, १२ तमः प्रधान समष्टि मनो वृत्तियों
के लिये नियोज्य हैं १३ देहासक्त १४ माणा १५ रुद्र को देवता रखने वाले हैं १८

उक्तास्सञ्चरा एताः शुनासीरीयाः प्रचेता वायव्याः

प्रचेताः सोर्याः १९

सञ्चराः^१। उक्ताः^२। एताः^३। शुनासीरीयाः^४। प्रचेताः^५। वायव्याः^६। प्रचे-
ताः^७। सोर्याः^८॥ १९॥

ओं उक्ता इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः आर्च्युषिण क छन्दः द्रव्यं देवतम्) १
पदार्थः १ आग्नेय आदि पंचदश पशु २ कहे गये ३ कर्बुर वर्ण जो नील पशु

है ४ उनका देवता इन्द्र है ५ जो श्वेन वर्णीनीन पशु है ६ उनका देवता वायु है ७ जो श्वेन वर्णीनीन पशु ८ उनका देवता सूर्य है ॥ १६ ॥

अथाध्यात्मम् - १ आग्नेय आदि पंच दश २ कहे गये ३ जो विष्णु भाव को प्राप्त ४ उनका देवता विष्णु है ५ जो शुद्ध प्राण ६ उनका देवता वायु है ७ जो शुद्ध आत्म प्रति विंव ८ उनका देवता सूर्य है ॥ १६ ॥

वसन्ताय कपिञ्जलानां लभते ग्रीष्माय कल
विङ्कान्वर्षाभ्यास्ति तिसीरञ्छरदेवर्तिका हे मुन्ता

यक कशत्रिच्छा शिराय वि क करान् २०
कपिञ्जलानां वसन्ताय १ आलभते २ कल विङ्कान् ३ ग्रीष्मा-
या तिसिरीन् ४ वर्षाभ्यः ५ वर्तिकां ६ शरदे ७ क करान् ८ हे म-
न्ताय ९ विक करान् १० शिशिराय ॥ २० ॥

उं वसन्ता येत्यस्य प्रजापति ऋषिः स्वरादनिष्ट पृच्छन्दः द्रव्यं देवतम् १
पदार्थः - श्रवणाराधय पशुभ्यो को कहते हैं इ की सद्युषों के मध्य वीस-
अन्नराल होने हैं वहाँ पहिले अन्नराल में १ नीन कपिञ्जलों को २ वसन्ता-
भिमानि देवता के लिये ३ नियुक्त करता है ४ नीन चदकों को ५ ग्रीष्माभिमा-
नी देवता के लिये ६ तीन नीनरों को ७ वर्षाभिमानि देवता के लिये ८ तीन व-
र्तिका नाम पक्षी को ९ शरदाभिमानि देवता के लिये १० नीन क करों में एक
को पहिले श्रव काश में शेष को दूसरे श्रव काश में ११ हे मन्ताभिमानि देव-
ता के लिये १२ नीन विक कर नाम पक्षी को १३ शिशिराभिमानि देवता के लि-
ये नियुक्त करता है ॥ २० ॥

अथाध्यात्मम् - १ कामदेव की स्थान मनो वृत्तियों को २ प्रजापति के
अंग भूत वसन्त के लिये ३ नियुक्त करता है ४ अनाहत शब्द को प्राप्त कर-
ने वाले प्राणों को ५ प्रजापति के अंग भूत ग्रीष्म के लिये ६ वेद ग्राही वाक-

वृत्तियों को ७ प्रजापति के अंग भूत वर्षा के लिये ८ मार्ग में वर्तमान ९ प्रजाप-
ति के अंग भूत शरद के लिये १० आत्मांशु रूप ज्ञानेन्द्रियों को ११ प्रजापति के
अंग भूत हेमन्त के लिये १२ विलक्षण कर्मेन्द्रियों को १३ प्रजापति के अंग
भूत शिशिर के लिये नियुक्त करता है ॥ २० ॥

समुद्राद्यशिशुभारानालभनेर्पुर्जन्यायमण्डको

नभ्यो मत्स्याभिजाय कुलीपयान्वरूणाय नाका न १
शिशुभारान् १ समुद्राद्य १ आलभते १ मण्डकान् १ पुर्जन्याय १
मत्स्यान् १ अथ १ कुलीपयान् १ मिजाय १ नाकान् १ वरूणाय २
अं समुद्रायेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः ब्रह्मी छन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः १ शिशुभार नाम नीन जल चरों को २ समुद्र देवता के लिये ३ नियु-
क्त करता है ४ नीन में डकों को ५ पर्जन्य देवता के लिये ६ नीन मत्स्यों में दो
को दूसरे में एक को नीसरे अथ काश में ७ जल देवताओं के लिये नियुक्त
करता है ८ कुलीपय नाम नीन जल चरों को ९ मित्र देवता के लिये १० नाक
नाम नीन जल चरों को ११ वरूणा देवता के लिये नियुक्त करता है ॥ २१ ॥

अथ आध्यात्मम् - १ ज्ञान भूय मनुष्य को संसार बंधन से मारने वा-
ली मनोवृत्तियों को २ समष्टि मन के लिये ३ नियुक्त करता है ४ समाधिका-
ल को शोभा देने वाली बुद्धि वृत्तियों को ५ गगन में घे भ्रर विष्णु के लिये ६
संसार समुद्र में घुमने वाली ज्ञानेन्द्रियों को ७ ब्रह्मांशु रूप जलों के लिये ८
गगन रूप पर्वत में जिस का अमृत है उन प्राणों को ९ सूर्य के लिये १० दूरस्थ
लभेन ज्ञाने वाली कर्मेन्द्रियों को ११ वरूणा देवता के लिये नियुक्त करता है १
सोमाय ह १ सा नालभने वायवे वल्गा को इन्द्रा
दिभ्यां कुञ्चाभिजाय मद्रून्वरूणाय चक्रवा-
कान् ॥ २२ ॥

को वृद्धि वृत्तियों को

हंसान्^१। सोमा^२य^३। आत्^३भते^४। वल्^४काः^५। वाय^५वे^६। कुञ्चो^६न्।
 इन्द्रा^७निभ्याम्^८। मधून्^९। मित्रा^९य^{१०}। चक्र^{१०}वाका^{११}न्। वरुणा^{११}य^{१२}
 जं सोमा^{१२}येत्यस्य^{१३} (प्रजापति ऋषिः भुरिगार्वा विष्टपृष्ठं० द्रव्यं दैवतम्) १
 पदार्थः - १ तीन हंसों को २ सोम देवता के लिये ३ नियुक्त करता है ४ तीन
 वकपत्नी को ५ वायु के लिये ६ तीन कुञ्च को ७ इन्द्र अग्नि देवता के लिये
 ८ तीन जल^{को} को ९ मित्र देवता के लिये १० तीन चक्र वाक को ११ वरुण के लि
 ये नियुक्त करता है ॥ २२ ॥

अथाध्यात्मम् - १ आत्मारूप मनो वृत्तियों को २ चन्द्रमा के लिये
 ३ नियुक्त करना है ४ वल से जिन की वक्र गति है उन प्राणों को ५ वायु के
 लिये ६ आत्मारूप प्राणों को ७ महानारायण ब्रह्माग्नि के लिये ८ देहा
 सिमानी प्राणों को ९ सूर्य के लिये १० विषय सेना में जिन का स्नेह वचन
 है उन प्राणों को ११ वरुण के लिये १२ नियुक्त करता है ॥ २२ ॥

अनये^१कुट^२रुना^३लभ^४ते^५वन^६स्पति^७भ्य^८उल्^९कान्^{१०}गनी
 षोमा^{११}भ्या^{१२}ञ्चा^{१३}षान्^{१४}शिव^{१५}भ्या^{१६}म्मू^{१७}दू^{१८}ण^{१९}न्मित्रा^{२०}वरुणा^{२१}

भ्या^{२२}ङ्^{२३}पो^{२४}तान्^{२५}॥ २३ ॥

कुट^१रुना^२अनये^३। आल^४भते^५। उल्^६कान्^७। वन्^८स्पति^९भ्यः^{१०}। च
 षान्^{११}। अग्नी^{१२}षोमा^{१३}भ्याम्^{१४}। मू^{१५}दू^{१६}णान्^{१७}। अश्वि^{१८}भ्याम्^{१९}। कपो^{२०}ता
 न्^{२१}। मित्रा^{२२}वरुणा^{२३}भ्याम्^{२४}॥ २३ ॥

जं अनय इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः पंक्तिश्चन्द्रः० द्रव्यं दैवतम्) १

पदार्थः १ तीन कुक्कटों को २ अग्नि के लिये ३ नियुक्त करता है ४ तीन
 उल्कों में एक को चोथे में दो को पांचवें अथवा काश में ५ वनस्पत्य भिमानी
 देवताओं के लिये नियुक्त करता है ६ तीन चाषों को ७ अग्नि सोम देवता
 के लिये ८ तीन मूदूर को ९ अश्विनी कुमारों के लिये १० तीन कपोतों को

११ मित्रवरुणदेवताकेलिये नियुक्त करना है ॥ २३ ॥

अथाध्यात्मम् - १ देहवक्षपरशब्दजिनका है उन वाक् वृत्तियों को २ अग्नि केलिये ३ नियुक्त करना है ४ ओजसे जिनकी वड़ी इच्छा होनी है उन विषयों को ५ वनस्पतियों के लिये ६ विषय से वक् इन्द्रियों को ७ अग्नि सोम केलिये ८ बुद्धिनिवृत्ति योग शान्ति की दाता बुद्धि वृत्तियों को ९ नरनाशयण केलिये १० आत्मा जिन की नोका है उन इन्द्रिय शक्तियों को ११ गण उदान केलिये नियुक्त करना है ॥ २३ ॥

सोमाय लवाना लभते त्वष्ट्रे कोल्मी कान्गोषादी
देवानां भृत्नीभ्यः कुल्मीकाः देवजाभिभ्यः पारुषाणाम्

गृहपतये पारुषाणाम् ॥ २४ ॥

लवान् १। सोमाय २। आलभते ३। कोल्मी ४। कान् ५। त्वष्ट्रे ६। गोषादीः ७। देवानां ८। पत्नीभ्यः ९। कुल्मीकाः १०। देवजाभिभ्यः ११। पारुषाणाम् १२। गृहपतये १३। अर्धे १४॥

जो सोमायेत्यस्य (प्रजापति ऋषिः निचुद्वा स्या णिक् छं० द्रव्यं देवतम्) १ पदार्थः - १ तीन लवों में एक को पांचवें में दो को छठे अथवा काश में २ सोम देवता केलिये ३ नियुक्त करना है ४ तीन कोल्मी क पक्षी को ५ त्वष्टा देवता केलिये ६ तीन गोषादी पक्षिणी को ७, ८ देवपत्नियों के लिये ९ कुल्मी कानाम नीन पक्षिणी अंशों को १० देववधुओं के लिये ११ तीन पारुषाणाम पक्षिओं को १२, १३ गृहपति अग्नि केलिये नियुक्त करता है ॥ २४ ॥

अथाध्यात्मम् - १ जीवात्मा के अंश भूत मनो वृत्तियों को २ चन्द्रमा केलिये ३ नियुक्त करता है ४ शिल्पकिया अंशों को ५ त्वष्टा देवता केलिये ६ विषयवासनाओं को ७, ८ देवपत्निओं के लिये ९ काम कलाओं को १० देववधुओं के लिये ११ गगनामृत पानशील मन बुद्धि वाले आत्मप्र-

तिविंशो को १२, १३ अंतर्दामी परमेष्वर के लिये नियुक्त करता है ॥ २४ ॥

अन्हे पारावताना लभते रात्र्यै सीचा पूर हो रात्र
योः सुन्धिभ्यो जतुर्मासेभ्यो दाव्यो हान्संभवत

स राध महतः सुपर्णान् २५

पारावताना अन्हे अलभते सीचा पूः रात्र्यै । जतुः । अहो
रात्र योः सुन्धिभ्यः । दाव्युहान् । मासेभ्यः । महतः । सुपर्णा
ना समन्वत्सराय ॥ २५ ॥

ओं अन्ह इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः ब्राह्म्युषिः कछन्दः द्रव्यं देवतम्) १

पदार्थः - १ गीन परावत को २ दिन देवता के लिये ३ नियुक्त करता है ४ गी
न सीचा पूनामपाक्षिणी को ५ रात्रि देवता के लिये ६ गीन पात्रनाम पाक्षियों
को ७, ८ संख्याओं के लिये ९ गीन काल कंद को १० मास देवता के लिये ११
१२ गीन बड़े सुपर्ण को १३ समन्वत्सर देवता के लिये नियुक्त करता है ॥ २५ ॥

अथा ध्यात्मम् १ जीवात्मा के निष्काम धर्मों को २ देवयान मार्ग के
लिये ३ नियुक्त करता है ४ काम कल्याचन्द्रमा कामिनी पान श्रेर काम
से युक्त मन की वृत्तियों को ५ पितृयान मार्ग के लिये नियुक्त करता है ६ ज
न्म कीर्ति कामिनी श्रेर काम को ७, ८ दिन रात्रि की संधि के लिये नियुक्त
करता है ९ दानानुसंधान वृत्तियों को १० मास देवताओं के लिये नियुक्त
करता है ११, १२ आत्मा जीव ईश को १३ ब्रह्म के लिये नियुक्त करता है ॥ २५ ॥

भूम्या अखुना लभते नृरिक्षाय पाङ्क्तानि दु
वेक शांदिग्भ्यो न कुलान्वभु कान वान्तर

दिशाभ्यः ॥ २६ ॥

अखुन भूम्यै । अलभते । पाङ्क्तान् । अन्तरिक्षाय । का
शान् । दिवे । न कुलान् । दिग्भ्यः । वभु कान् । अन्तरदिशाभ्यः २६

ओं भूम्या इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः शार्ची विभुष छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १
 पदार्थः - १ तीन मूषक को २ भूमि देवता के लिये ३ नियुक्त करना है ४ ती-
 न पाङ्क्तनाम मूषकों को ५ अन्नरिक्ष के लिये ६ तीन काशनाम मूषकों को
 ७ स्वर्ग के लिये ८ तीन कुल को ९ दिशा देवताओं के लिये १० नीन वभु क को
 ११ अन्नर दिशाओं के लिये नियुक्त करना है ॥ २६ ॥

अथाध्यात्मम् १ कपण आत्मपतिविंशो को २ भूमि के लिये ३ नियु-
 क्त करना है ४ पंक्ति योग्य अर्थात् देवयज्ञ में कुशल आत्मपतिविंशो
 को ५ अन्नरिक्ष के लिये नियुक्त करना है ६ सगुण ब्रह्म के भक्त आत्मपति
 विंशो को ७ स्वर्ग के लिये नियुक्त करना है ८ कर्मेन्द्रियों को ९ दिशाओं
 के लिये १० ज्ञानेन्द्रियों को ११ अन्नर दिशा को लिये नियुक्त करना है ॥ २६ ॥

वसुभ्य ऋश्यानां नभते रुद्रेभ्यो रुद्रना दिल्ये
 भ्योन्यङ्कुन्विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान्साध्येभ्यः

कुलज्ञान् ॥ २७ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६
 ऋश्यानां वसुभ्यः १ आलभते २ रुद्रना ३ रुद्रेभ्यः ४ न्यङ्कुन्।
 आदिल्येभ्यः ५ पृषतान् ६ विष्वेभ्यः ७ देवेभ्यः ८ कुलज्ञान् ९ सा-
 द्येभ्यः ॥ २७ ॥

ओं वसुभ्य इत्यस्य (प्र० निच दार्घी ब्रह्मती छन्दो० द्रव्यं दैवतम्) १

पदार्थः - १ ऋष्यनाम तीन मृग को २ वसु देवताओं के लिये ३ नियुक्त
 करना है ४ रुद्रनाम तीन मृग को ५ रुद्रों के लिये ६ न्यङ्कुनाम तीन मृग
 को ७ आदिल्यों के लिये ८ पृषनाम तीन मृग को ९, १० विष्वे देवताओं के
 लिये ११ कुलज्ञानाम तीन मृग १२ साध्य देवताओं के लिये नियुक्त करना है २७
 अथाध्यात्मम् - १ ब्रह्मपति योग्य प्राणों को २ कमलों के लिये ३ नि-
 युक्त करना है ४ दश अनाहत शब्दों को ५ प्राणों के लिये ६ निरंतर गमण-

शीलज्ञानेन्द्रियों को ७ द्वादश आदिन्य के लिये ८ गगनामृत से सिक्त इन्द्रियों को ९१० विष्वे देवाओं के लिये ११ मानसभूमि में गमन शील इन्द्रियों को १२ साध्य देवताओं के लिये नियुक्त करता है ॥ २३ ॥

ईशानाय परस्वत आलभनेभिर्वायु गोरान्वरु

णाय महिषान्वहस्पतृगवयास्त्वष्ट्र उष्टान् ॥ २८ ॥

परस्वतः। ईशानाय। आलभतो। गोरान्। मित्राय। महिषान्। वरुणाय। गवयान्। वहस्पतये। उष्टान्। त्वष्ट्रे ॥ २८ ॥

पदार्थः- १ परस्वत नाम नीनमृग कां २ ईशान देवता के लिये ३ नियुक्त करता है ४ गोर नाम नीनमृग को ५ मित्र देवता के लिये ६ महिष नाम नीनमृग को ७ वरुण देवता के लिये ८ गवय नाम नीन पशु को ९ वहस्पति के लिये १० नीन उष्ट्र को ११ त्वष्टा देवता के लिये नियुक्त करता है २८
अथ आध्यात्मम् - १ पराशक्ति जिन में विद्यमान है उन जीवों को २ ईशान देवता के लिये ३ नियुक्त करता है ४ ऋद्ध माणों को ५ मित्र देवता के लिये ६ वाक् आदि ऋत्विजों को ७ ईश्वर के लिये ८ आरण्यकाण्ड सम्वधी इन्द्रियों को ९ विष्णु के लिये १० पुष्टि शक्ति रेचरी ध्वनि की दाना बुद्धि वृत्तियों को ११ महानारायण के लिये नियुक्त करता है ॥ २८ ॥

प्रजापतये पुरुषान् हस्तिन् आलभने वाचे सुषी

१ ऋक्षुषे मशकाञ्छ्रोत्राय भृङ्गा ॥ २९ ॥

पुरुषान्। हस्तिनः। प्रजापतये। आलभतो। लुषीन्। वाचे। मशकान्। चक्षुषे। भृङ्गाः। ओत्राय ॥ २९ ॥

प्रजापतय इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः आर्चीपंक्ति ऋद्धः द्रव्यं देवतम्) १ पदार्थः- १, २ हाथियों को ३ प्रजापति के लिये ४ नियुक्त करता है ५ नीन वक्रनुड को ६ वाक् देवता के लिये ७ नीन मशक को ८ चक्षु देवता के लिये

प्रजापतये पुरुषान् हस्तिन् आलभने वाचे सुषी १ ऋक्षुषे मशकाञ्छ्रोत्राय भृङ्गा ॥ २९ ॥

९ नीलभृङ्गः को १० श्रोत्रदेवता के लिये नियुक्त करता है ॥ २९ ॥

अथाध्यात्मम् १, २ देहाभिमानी कर्मद्विषात्म प्रतिविंशों को ३ अग्नि के लिये ४ नियुक्त करता है ५ भक्ति उत्पन्न करने वाले वचनों को ६ स्वस्वती के लिये ७ अनाहत शब्दों को ८ मानस सूर्य के लिये ९ गगनमंडल के सहस्रदल कमल में अनाहत शब्द करने वालों को १० श्रोत्र के लिये नियुक्त करता है ॥ २९ ॥

प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणाधारणयो
मेघो यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूल
लाय शोहिदृषभाय गवयी क्षिप्रश्वेनाय वर्तिको
नीलङ्गोऽक्रिमिः समुद्राय शिशुमारो हिमवते हस्ती ३०
प्रजापतये च वायवे च गोमृगः ३१ आरण्यः मेघः ३२ वरुणा
यः कृष्णः ३३ यमाय मर्कटः ३४ मनुष्यराजाय शार्दू
लाय गवयी ३५ कृषभाय वर्तिको ३६ क्षिप्रश्वेनाय क्रिमिः ३७
नीलङ्गो शिशुमारः ३८ समुद्राय हस्ती ३९ हिमवते ॥ ३० ॥

ओं प्रजापतय इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः निचदति धृतिश्चन्द्रः द्रव्यदैवतम्) १
पदार्थः १ प्रजापति २ श्रोत्र ३ वायु देवता के लिये ४ भी ५ गवय पशु नि
युक्त करना चाहिये ६ वनवासी ७ मेघ ८ वरुण के लिये ९ कृष्ण वर्ण मेघ १०
यम के लिये ११ मर्कट १२ मनुष्य राजानाम देवता के लिये १३ शोहित १४
शार्दूल देवता के लिये १५ गवयी १६ कृषम देवता के लिये नियुक्त कर
ना चाहिये १७ वर्तिका १८ क्षिप्र श्वेन देवता के लिये १९ कीट २० नीलंग
व देवता के लिये २१ शिशुमार जलचर २२ समुद्र के लिये २३ हस्ति २४
हिमवान के लिये नियुक्त करना चाहिये ॥ ३० ॥

अथाध्यात्मम् - १ ब्रह्म २ श्रोत्र ३ प्राण के लिये ४ भी ५ इन्द्रियों में

अन्वेषक आत्मप्रतिविवनि युक्त करना चाहिये ६ आरण्य कांड सम्बन्धी
 ७ मायारूप अन्न वाला प्राण ८ परमेश्वर केलिये ९ तम प्रधान प्राण १० य
 म केलिये ११ कमलों में गति शील प्राण १२ प्राणेश केलिये १३ मानस सू
 र्य १४ उस ब्रह्म केलिये जिस में विष्णु ब्रह्मा सूर्य शिव और मोहनी माया
 कालय हो जाता है १५ शब्द ब्रह्म को प्राप्त करने वाली १६ महानारायण
 केलिये १७ योग मार्ग में वर्तमान बुद्धि १८ ब्रह्मा विष्णु महेश वायु सूर्य में
 व्यापक महानारायण केलिये १९ क्रमि की समान देह का भक्षक शोक
 २० तमो गुण केलिये २१ अज्ञानी का घातक काम २२ रजो गुण केलिये २३
 कर्म में कुशल देहाभिमान रूप अहंकार ब्रह्मा विष्णु महेश देवी रूप वि
 राट पुरुष केलिये नि युक्त करना चाहिये ॥ ३० ॥

मयुः प्रजापत्य उलोहलि क्षणौ वषट् ११ शस्तिधा
 त्रेदिशाङ्कः १२ धुङ्क्षाग्नेयी कल्बिङ्को लोहिना
 १ हिः पुष्करसादस्तेत्वाश्वावाचे कुञ्चः ॥ ३१ ॥
 मयुः प्रजापत्यः १३ उल्ः १४ हलि क्षणः १५ वषट् १६ शाः १७ वाचे
 कङ्कः १८ दिशाः १९ धुङ्क्षा २० आग्नेयी २१ कल्बिङ्कः २२ लोहिना हिः २३ पु
 ष्करसादः २४ नो २५ त्वाश्वाः २६ कुञ्चः २७ वाचे ॥ ३१ ॥

जो मयुरित्यस्य (प्रजापति ऋषिः विराट् विष्टप छन्दः द्रव्यं देवतम्) १
 पदार्थः - १ नुरङ्ग वदन किन्नर २ प्रजापति को देवता रखने वाला है ३ उल्
 नाम मृग ४ हलि क्षण नाम सिंह ५ विडाल ६ वेतीनों ७ धाता केलिये ८ व
 क पक्षी ९ दिशा देवताओं केलिये १० धुङ्क्ष नाम पक्षिनी ११ अग्नि देवता
 केलिये १२ चटक पक्षी १३ लाल वर्ण सर्प १४ कमल भक्षी पक्षी विशेष १५
 वेतीनों १६ लघा देवता केलिये १७ कुञ्च १८ वाग देवता केलिये नि युक्त
 करना चाहिये ॥ ३१ ॥

अथाध्यात्मम् - १ बुद्धिश्चोर निवृत्ति से युक्त जीवात्मा २ ब्रह्म के लिये
३ चन्द्रमा में लय होने वाला मन ४ जिस्से आकाश वाणी विद्या शब्द और
वासुदेव का ज्ञान होता है वह ओम् ५ काम को दर्शने वाला विराग ६ वे-
दीनों ७ ईश्वर के लिये ८ शब्द जिसका सिन्धु है वह ओम् ९ दिशाओं के
लिये १० ब्रह्मतेज से मदीत्यवाक् ११ अग्नि के लिये १२ अनाहन शब्द क
रने वाला प्राण १३ रक्त वर्ण मानस कमल १४ कमल स्थ मानस सूर्य १५
वे १६ महानारायण को देवता रखने वाले हैं १७ देहाभिमान सम्वाधिनी
व्याधिवाक् १८ महावाक् के लिये नियोज्य है ॥ ३१ ॥

सोमाय कुलङ्ग आरण्योर्जो न कुलः शको नैषो
षाः क्रोष्टा मायोरिन्दस्य गोरमुगः पिद्मन्यङ्कुः
कक्कटस्तेन मत्स्ये प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः ॥ ३२ ॥
कुलङ्गः १ सोमाय २ आरण्यः ३ अर्जः ४ न कुलः ५ शका ६ तौ ७ पोषाः
क्रोष्टा ८ मायो ९ गोरमुगः १० इन्द्रस्य ११ न्यङ्कुः १२ पिद्मः १३ कक्कटः
तौ १४ अश्विन मत्स्यौ १५ चक्रवाकः १६ प्रतिश्रुत्कायौ ॥ ३२ ॥

ओं सोमायेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः भुरिगजगती छन्दः द्रव्यदैवतम्) १
पदार्थः - १ हरिण २ सोम के लिये ३ वन वासी ४ छाग ५ न कुल ६ श-
कुंती ७ वेदीनों ८ पूषा को देवता रखने वाले हैं ९ अङ्गाल १० माया देवता
का है ११ गोरमुग १२ इन्द्र का है १३ पिद्म नाम मुग १४ न्यङ्कु १५ कक्कट
१६ वेदीनों १७ अश्विन प्रति देवी के लिये १८ चक्रवाक् १९ प्रतिश्रुत्क देवता
के लिये नियुक्त करना चाहिये ॥ ३२ ॥

अथाध्यात्मम् - १ मानस भूमि में लीन हो कर चलने वाला मन २
चन्द्रमा के लिये ३ आरण्य कांड सम्वाधिनी ४ वाक् ५ भूमि में लयन होने
वाला प्राण ६ ब्रह्मज्ञान में समर्थ बुद्धि ७ वेदीनों ८ मानस सूर्य को देवता

रखने वाले हैं ६ रुदन शील काम १० माया देवता का है ११ ब्रह्मान्वेषणी-
ल जीवात्मा १२ महानारायण के लिये १३ सावित्री विद्या श्वोर दान युक्त उ-
द्धि १४ निरंतर गमन शील प्राण १५ काम आत्म प्रति विंव श्वोर देह का
आवरण करने वाला मन १६ वे तीनों १७ अनुमति देवी के लिये १८ सं-
सार सम्बन्धी वाक् १९ प्रति ध्वनि रूप देवी के लिये नियोज्य हैं ॥ ३२ ॥

सोरी वलाका शार्गः स्तजयः शयाण्डकस्तेमै-
त्राः सरस्वत्ये शारिः पुरुष वाक् भ्राविदो मीशो
दुलोवकः पदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुक्ः

पुरुष वाक् ३३

वलाका। सोरी। शार्गः। स्तजयः। शयाण्डकः। तो। मेत्राः। पु-
रुष वाक्। शारीः। सरस्वत्ये। भ्राविता। भोमैः। शार्दुलः। हु-
कः। पदाकुः। तो। मन्यवे। पुरुष वाक्। शुक्ः। सरस्वते। ३३।
ओं सौरीत्यस्य (प्रजापति ऋषिः भुरिगति जगती छन्दः द्रव्यं देवतम) १
पदार्थः - १ वलाका २ सूर्य को देवता रखने वाली है ३ शार्गनाम पक्षी
४ स्तजय नाम पक्षी ५ शयाण्डक नाम पक्षी ६ वे ७ मित्र को देवता रखने-
वाले हैं ८ पुरुष की समान बोलने वाली ९ शुक्ती १० सरस्वती के लिये-
११ सेधा १२ भूमि देवता के लिये १३ व्याघ्र १४ चित्रक १५ सर्प १६ वे ती-
नों १७ मन्यु देवता के लिये १८ पुरुष की समान बोलने वाला १९ शुक्-
२० समुद्र के लिये नियोज्य है ॥ ३३ ॥

अथाध्यात्मम् - १ काम की बुद्धि २ मानस सूर्य को देवता रखने-
वाली है ३ शायन किया श्वोर जो गुण को प्राप्त जीवात्मा ४ इन्द्रियों की
चाल में विषयों का जीतने वाला जीवात्मा ५ शया सम्बन्धी व्याधि देह का
प्रकाशक जीवात्मा ६ वे तीनों ७ पितृयान को देवता रखने वाले हैं ८

जीवात्मवादिनी ६ दुर्बलावाक १० महावाक के लिये ११ विषयी जीवात्मा
१२ भूमिदेवता के लिये १३ हिंसाशील व्यष्टि अहंकार १४ ग्रहणाशीलव्य
ष्टि अहंकार १५ सर्पकी समान डसनेवाला व्यष्टि अहंकार १६ वेतीनों १७
समष्टि अहंकार के लिये १८ जीवप्रसंशा में तत्पर १९ शोकमयमन २०
समष्टि मन के लिये निबोज्य है ॥ ३३ ॥

**सुपर्णः पार्जन्यश्चानिर्वोहसोदर्विद्वानेवायवे
दहस्पतयेवाचस्पतयेपैङ्गराजोऽलजश्चान्तरी
क्षः क्षवामहुर्मत्स्यस्तेन दीपतयेद्यावाप्राप्ति**

वीयः कूर्मः ॥ ३४ ॥

सुपर्णः १ पार्जन्यः २ शानिः ३ वाहसः ४ दर्विदा ५ तो ६ वायवे ७ पैङ्ग
राजः ८ वाचस्पतये ९ दहस्पतये १० अलजः ११ शान्तरिक्षः १२ त्वेवः
महुः १३ मत्स्यः १४ तो १५ नदीपतये १६ कूर्मः १७ द्यावाप्राप्ति वीयः ॥ ३४ ॥
ओं सुपर्ण इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः स्वराट्शकरी छन्दः द्रव्यं देवनम) १
पदार्थः - १ सुपर्ण २ पार्जन्य देवता के लिये ३ श्याडी ४ वाहस ५ काष्ठ
कुट्ट ६ वेतीनों पक्षी ७ वायुदेवता के लिये ८ पैङ्गराज पक्षी ९ वाक्पति १०
दहस्पति के लिये ११ अलज पक्षी १२ अन्तरिक्ष देवता के लिये १३ लव
नामजल पक्षी १४ कारण्डव १५ मत्स्य १६ वेतीनों समुद्र के लिये १७ क
च्छप १८ प्रायिवी स्वर्ग के लिये निबोज्य हैं ॥ ३४ ॥

अथ आद्यात्मम् - १ जीवात्मा २ अमृत वह्नि कर्मापरमेष्ठि के लिये
३ निरंतर गामी प्राण ४ निरुद्ध प्राण ५ योग के योग्य प्राण ६ वेतीनों ७ वा
यु देवता के लिये ८ मन बुद्धि वाक् श्रोत्र विषय में राजमान आत्म प्रतिविं
वर्ध सोहं वाणी के स्वामी १० प्राण के लिये ११ ललाट श्रोत्र मन के बीच प्रा
दुर्भन प्राण १२ कमलान्तरिक्ष देवता के लिये १३ गतिशील मनो वह्नि

१४ गर्वत्यागी मनो वृत्ति १५ बुद्धि निवृत्ति शुद्धि श्चोर सोहं मंत्र में युक्त मनो
वृत्ति १६ वे १७ समाहि मन के लिये १८ मानस सूर्य वा माण १९ षष्ठि वी स्व-
र्ग के लिये नियोज्य है ॥ ३४ ॥

पुरुषमुगश्चन्द्रमसो गोधा काल का दार्वाद्या
तस्ते वनस्पतीनाङ्क कवाकुः सावित्रो ह ७ सो
वानस्य नाङ्को मकरः कुलीपयस्ते कृपारस्य

द्वियै शाल्यकः ॥ ३५ ॥

पुरुषमुगः १ चन्द्रमसः १ गोधा १ काल का १ दार्वाद्या १ तो १
वनस्पतीनाम् १ क कवाकुः १ सावित्रः १ हंसः १ वानस्य १ ना-
ङ्कः १ मकरः १ कुलीपयः १ तो १ शकृपारस्य १ शाल्यकः १ द्वियै ३५
जों पुरुषमुग इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः निवृच्छ करी छन्दः द्रव्यं दैवतम्) १
पदार्थः - १ पुरुषमुग २ चन्द्रमा के लिये ३ गोधा ४ काल का ५ सार-
सनाम पक्षी ६ वे ७ वनस्थानि नाम देवताओं के लिये ८ ताम्रचूड ९ साविता
देवता के लिये १० हंस ११ वायु देवता के लिये १२ नाङ्क १३ मकर १४ कुली-
पय १५ ये तीनों जलचर १६ समुद्र देवता के लिये १७ अ्यावित १८ द्वी देवी
के लिये नियुक्त करना चाहिये ॥ ३५ ॥

अथाध्यात्मम् - १ जीवात्मा का विषयान्वेषी मन २ चन्द्रमा के लि-
ये ३ इन्द्रियों की धारक अन्तः करण वृत्ति ४ शरीर ५ पंचतन्मात्रा से ता-
डित इन्द्रिय समूह ६ वे ७ समाहि इन्द्रियों के लिये ८ प्राण ९ साविता दे-
वता के लिये १० आत्मप्रतिविंब ११ प्राण के लिये १२ कर्मेन्द्रिय समूह
१३ ज्ञानोन्द्रिय समूह १४ गगनमंडल में अमृत का ररवने वाला प्राण
१५ वे १६ समाहि मन के लिये १७ दुर्वाक्य १८ द्वी देवी के लिये नियुक्त क-
रना चाहिये ॥ ३५ ॥

एणय ह्नेम एइ को मूषिका नि निरि स्मे सर्पाणि
 स्त्रोपाश श्रुचिनः कृष्णो रात्र्या ज्मक्षी जतुः सु
 धिली काल इतर जनाना ज्मह का वैष्णवी ३६
 एणी। अन्हः। मण्डकः। मूषिका। नि निरिः। ने। सर्पाणि।
 लोपाशः। श्रुचिनः। कृष्णः। रात्र्यै। ज्मक्षः। जतुः। सुधिली
 का। ने। इतर जनानाम्। जह का। वैष्णवी ॥ ३६ ॥

ओणय ह्ने इत्यस्य (प्रजापति ऋषिः निवृत्त जगती बन्दः इव्यं देवतम्) १

पदार्थः - १ मृगी २ अन्ह देवता केलिये ३ मण्डक ४ मूषिक ५ नि नि
 री ६ वेतीनों ७ सर्प नाम देवताओं केलिये ८ लोपाश नाम वन चर ९ श्रुचि
 नी कुमारों केलिये १० कृष्ण मृग ११ रात्रि नाम देवता केलिये १२ भस्त्र क
 १३ जतु १४ सुधिली का नाम पक्षी १५ वेतीनों १६ इतर जन देवताओं केलि
 ये १७ जह का १८ विष्णु देवता केलिये नियोज्य है ॥ ३६ ॥

श्रया ध्यात्मम् - १ विष्णु में प्राप्त करने वाली सुशुम्ना २ उत्तरायण दे
 वता वाली है ३ प्राण ४ परधन हरण शील बुद्धि ५ अशुद्ध वचनों की धारक
 वाक् ६ वे ७ लोकों केलिये ८ विनाश जिस का भोजन है वह जीवात्मा ९ नर
 नारायण को देवता रखने वाला है १० तम प्रधान जीवात्मा ११ दक्षिणाय
 न देवता केलिये १२ निवृत्त श्रुचि का काम १३ जन्म कीर्ति भोगि और एनि
 का समूह १४ कुत्सित बुद्धि वृत्ति १५ वे १६ भेदाश्रय मनुष्यों केलिये १७
 त्याग शीला बुद्धि वृत्ति १८ विष्णु देवता केलिये नियोज्य है ॥ ३६ ॥

अन्य वापे र्धमासानामु श्रयो मयूरः सुपर्णस्ते
 र्गन्धर्वरागमपा मुद्रो मासा इः शयपा रोहि कुण्ड
 णाची गोलनिका। तुप सरसाम्मु न्य वैसितः। ३७।
 अन्य वापः। श्रधमासानाम्। ऋष्यः। मयूरः। सुपर्णः। ने।

गन्धर्वाणाम्। उद्ः। अपाम्। कश्यपुः। मासाम्। रोहिताम्।
कुण्डिणाञ्ची। गोल्लितिका। तो। अप्सरसाम्। अमितः। सु-
त्यवे॥ ३७॥

जो अन्य वाप इत्यस्य (प्रजापतिर्दृष्टिः भुरिगजगती छन्दः द्रव्यं देवतं) १
पदार्थः - १ कोकिल पक्षी २ पक्ष नाम देवताओं के लिये ३ कश्यपुः
ग ४ मयूर ५ सुपर्ण ६ वे ७ गन्धर्वों के लिये ८ कर्कट नाम जलचर ९ जल दे-
वता १० के लिये १० कच्छप ११ मास देवताओं के लिये १२ कश्यप १३ कु-
ण्डिणाञ्ची वनचरी १४ गोल्लितिका १५ वे १६ अप्सराओं के लिये १७ कषा-
प १८ मयूर देवता के लिये नियोज्य है ॥ ३७॥

अथाध्यात्मम् - १ जिसका संस्कार काम से होता है वह जीवा-
त्मा २ देवता पितरों के लिये ३ गति मान प्राण ४ बुद्धि निदृष्टि योग और
शान्ति का दाना प्राण ५ विष्णु वाहन रूप प्राण ६ वे ७ क म ल स्थ देवता-
ओं के लिये ८ ऊर्ध्व गति दाना प्राण ९ कमलान्तरिक्षों के लिये १० अवि-
द्यारूप सुरा का पान करने वाला आत्म मति विं व ११ देवता पितरों के लि-
ये १२ कुटिल गति वाला १३ इन्द्रिय समूह में लसिका की समान १४ मा-
नस सूर्य १५ वे तीनों १६ अप्सराओं के लिये १७ तम प्रधान १८ मृत्यु के
लिये नियुक्त करना चाहिये ॥ ३७॥

वर्षाहर्षतूनाभारवुः कशोमान्ध्यालस्तेपितु-
णाभ्वलायाजगरेवसुनाहुपिञ्जलः कपोत-
जलुकः शशास्तेनिर्हृत्येवरुणाधारयो

मेघः॥ ३८॥

वर्षाहर्षतूनाभाम्। भारवुः। कशः। मान्ध्यालः। तो। पितृणा-
म्। शजगरः। वलाय। कपिञ्जलः। वसुनाम्। कपोतः। जलुकः।

१४ शशः। तो। निर्वस्त्ये। १७ शरणायः। मेघः। १८ वरुणाय ॥ ३८ ॥

उं वर्षा हरित्यस्य (प्रजापति ऋषिः विराडिति जगती छन्दः द्रव्यं देवतम्) १ पदार्थः १ भेकी २ ऋतुओं के लिये ३ मूषक ४ कश ५ मान्याल ६ वेनी नों पितरों के लिये ८ अजगर ९ वल देवता के लिये ए० पिञ्जल ११ वसु देवता के लिये १२ कपोत १३ उलूक १४ शश १५ वेनीनों १६ निर्वर्तिन देवता के लिये १७ वनवासी १८ मेघ १९ वरुण देवता के लिये नियुक्त करें ३८

अथाध्यात्मम्

१ व्यष्टि देह में व्यापक बुद्धि २ प्रजापति के अंग

ऋतुओं के लिये ३ तम प्रधान मन ४ रज प्रधान मन ५ जिस में काम और पंच ज्ञानेन्द्रियों का लय होता है वह सात्विकी मन है तीनों ७ समष्टि मनो वृत्तियों के लिये ८ जीवात्मा के लिये विषरूप काम ९ वल के लिये १० जिस का बंधन स्थान शरीर है वह आत्म प्रतिविंब ११ अग्नि षष्टि वायु अन्न रिक्त सूर्य स्वर्ग चन्द्रमानक्षत्र नाम वसुओं के लिये १२ जिस की नोका शरीर है वह आत्म प्रतिविंब १३ मोहिनी स्त्री वारुणी और काम में जिस का सुख है वह जीवात्मा १४ निव्य शयन शील जीवात्मा १५ वेनी नों १६ मृत्यु के लिये १७ शरणाय कांड सम्वंधी १८ माया को भक्षण करने वाला योगारूढ १९ ईश्वर के लिये नियुक्त करें ॥ ३८ ॥

शिवञ्चादित्यानामष्टौ एषाणी वान्वाधीनुससे
मत्याश्रयायायस्मुरोरुसुरौद्रः कपिः कुटर्

दौत्यो हस्ते वाजिनाङ्गामायपिकः ॥ ३९ ॥

शिवः। आदित्यानाम्। उष्ट्रः। द्वाणिवान्। वाधीनुसः। तोम
त्यै। स्मरः। शरणायाय। रुः। कपिः। कुटर्। दौत्यो हः। त
वाजिनाम्। पिकः। कामाय ॥ ३९ ॥

पदार्थः - १ श्वेतपशु २ आदित्यों के लिये ३ उष्ट्र ४ घ्राणि वान पशु ५ कंद में स्तन ररवने वाला अज ६ वे गीनों ७ मति देवी के लिये ८ गवय ९ अरण्य देव ता के लिये १० रुरु मुग ११ रुद्र देवता के लिये १२ कृषि पक्षी १३ कुक्कुट १४ काल कंद १५ वे गीनों १६ वाजी देवताओं के लिये १७ कोकिल १८ काम देव के लिये नियुक्त करै ॥ ३९ ॥

अथाध्यात्मम् - १ शायन वारुणी श्वोर कामिनी से रक्षा करने वाला ज्ञान चक्षु २ आदित्यों के लिये ३ पुष्टि शक्ति श्वोर रवेचरी ध्वनि की दत्ता बुद्धि ४ मानस सूर्य से युक्त मन ५ मन में गमन करने वाला प्राण ६ वे गीनों ७ विद्या रूपिणी देवी के लिये ८ गमन शील प्राण ९ ब्रह्मा विष्णु महेश सूर्य रूप समष्टि प्राण के लिये १० रुद्र नशील प्राण ११ रुद्र देव ता के लिये १२ पंच नव मय स्थूल देह १३ सूक्ष्म शरीर १४ लिङ्ग देह १५ वे गीनों १६ देहाभिमान जीवों के लिये १७ पान कामिनी श्वोर देह का समूह १८ काम देव के लिये नियुक्त करै ॥ ३९ ॥

रवद्गोवैश्वदेवः श्वा कृष्णाः कर्णो गर्दभस्तारक्षु
स्तेरक्षसा मिन्द्राय सुकरः सिंहो मारुतः क
कलासः पिपका शकुनिस्ते शरव्या ये विश्वेषा

न्देवानां मुषतः ४०

रवद्गोवैश्वदेवः १ कृष्णाः २ श्वा ३ कर्णः ४ गर्दभः ५ तारक्षुः ६ तो ७ रक्षसा ८ मारुतः ९ सिंहः १० मिन्द्राय ११ सुकरः १२ कलासः १३ पिपका १४ शकुनिः १५ तो १६ शरव्या १७ ये १८ विश्वेषा १९ देवानां २० मुषतः २१ १

पदार्थः - १ रवद्गुग २ विश्वे देवाओं के लिये ३, ४ काला सार मेय ५ दलंवे कान वाला गर्दभ ७ श्वोर मुग भक्षी तरक्षु ८ वे ९ रक्षसों के लिये १०

सूकर ११ इन्द्र के लिये १२ सिंह १३ मरुत देवता के लिये १४ सरट १५ पि-
प का पाक्षिणी १६ शौर शकुनि पक्षी १७ वे १८ शरव्य देवी के लिये १९ ष-
षत मुग २० २१ विश्वे देवाओं के लिये नियुक्त करै ॥ ४० ॥

अथ ध्यात्मम् - १ भेद को प्राप्त द्वैत सिद्धांत २ विश्वे देवाओं के लिये
३, ४ अशुद्ध वासना का कारण विषय ५, ६ गीत काम रूप कामानल सुख
ज्वल काम कर्षिणी में प्रकाश करने वाला कुटिल काम ७ चौरजय राक्ष-
स शौरचन्द्रमा की समान आल्हादिक गुण वाला लोभ ८ वेनीनों ९ राक्ष-
सों के लिये १० वाण रूप जीवात्मा का दाता प्राण ११ परमेश्वर के लिये १२
परमेश्वर में प्राप्त होने वाला प्राण १३ मरुत देवता के लिये १४ शब्द स्प-
र्श आदि पंच विषयों में स्थित शरीर १५ मन काम पान प्राण जिसके प्रका-
शक हैं वह विषय वासना १६ मति विंव १७ वे सव १८ अपरा रूप लक्ष्य-
के लिये १९ गगनामृत से सिक्त इन्द्रिय समूह २०, २१ सव देवताओं के
लिये नियुक्त करै ॥ ४० ॥

इति श्री भट्ट वंशा वनं स श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्मा कृते भु-
क्त यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

आ दन्द्रि रव का न्दन्त मूलैर्मुदम्ब रैस्ते गा
न्द ११ प्रभ्या १२ सरस्वत्या श्रय जिह्व जिह्वा या
उत्साद मवक्त्रन्दे न तालु वाज १३ हनु भ्या मपश्चा-
स्येन वषण माण्डाभ्या मादित्यां प्रम भ्नुभिः पंथा
नम्भुभ्यान्धावाप्राधि वीवर्तोभ्यां विद्युतदूनीन
काभ्या १४ भुक्ताय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्या
णि पक्ष्माण्य वार्या इक्षवो वार्याणि पक्ष्माणि
पार्या इक्षवः १

१शादम्। दद्भिः^२। अ३वकाम। दन्तु^४मूलैः^५। मुदं^६। वस्वैः^७। तेषाम्।
 दंष्ट्राभ्याम्। अ१३जिह्वाम्। सरस्वत्यै^{१४}। उत्सादम्। जिह्वायाः^{१५}।
 तालु^{१६}। अ१७वक्त्रे^{१८}न। वाजम्। हनुभ्याम्। आस्येन^{१९}। अपः^{२०}। आ१६
 भ्याम्। वषणम्। अ२१भूमिः। आदित्यान्। भूभ्याम्। प१७थानम्
 वतीं^{२२}। द्यावा^{२३}। ए१८धिवी^{२९}। कनीनकाभ्याम्। विद्युतं^{३०}। भुक्तायास्व।
 हा। कषणाया^{३१}। स्वाहा। प१९स्माणि। पा१८याणि। इक्षुवः^{३२}। अ१९वा१८याशि^{३३}१
 नोमंजतकवाहाणभाग है इसलियेदिनि योग नही हैं देह के अंगों को दे
 वार्पण करता है ॥

पदार्थः १ महा काल को २ दांतों की शक्ति से तमि करना हं ३ ब्रह्मांश
 रूपजलों को व्याप्त करने वाली महा काली को ४ दांतों के मूल से तमि
 करता हं ५ अपरा मकति को ६ दंत पीछें से तम करना हं ७ परा मकति को ८
 डाढ़ों से तम करना हं ९ जिह्वाग्र को १० सरस्वती के समर्पण करना हं ११
 पल याग्नि को १२ जिह्वा से तम करना हं १३ तालू को १४ जल देवता से
 युक्त करना हं १५ अन्नाभिमानी देवता को १६ हनु अंगों से तम करना
 हं १७ मुख से १८ जल देवता को तम करना हं १९ जीव ईश्वर पाक्षियों से २०
 कामनाओं की वर्षा करने वाले महानारायण को तम करना हं २१ मुख
 के वालों से २२ आदित्यों को तम करना हं २३ दोनों भूसे २४ देवयान मार्ग
 को तम करना हं २५ पलकों से २६ एधिवी स्वर्ग को तम करना हं २७ आरव
 की पुनलियों से २८ विद्युत देवता को तम करना हं २९ सत्व गुण मय विष्णु
 के लिये ३० ओष्ठ होम हो ३१ तमोगुण मय रुद्र के लिये ३२ ओष्ठ होम हो ३३
 आरवों के ऊपर के पलक जो हैं ३४ उनका देवता पार है ३५ जो नीचे के प
 लक हैं ३६ उनका देवता अवार है ॥ ११ ॥

वानस्प्राणेनापानेन नासिके उपयाममधरेणेति

नसदुत्तरेणप्रकाशेनान्तरमनुकशेनवाह्यं नि
 देष्यं मुद्गार्स्तेनयितुं निर्वाधेनाशानिम्मास्तिर्धे
 णविद्युतइनीनकाभ्याङ्कुर्णभ्यां१० प्रोत्र१० प्रो
 त्रभ्याङ्कुर्णतेदनीमधरकएहेनापः शुष्ककएहे
 नचिन्ममन्याभिरदिनि१० श्रीषर्णानिर्जृतिनिर्जृ
 र्जत्मेनश्रीषर्णसिङ्गोशैः प्राणान्प्राण१० स्तुपेन२
 प्राणेन। वातम्। श्पाननु। नासिके । श्पधरेण। श्पोधेन
 उपयामम्। उत्तरेण। सत्। प्रकाशेन। श्पन्तरम्। श्पन्तुका
 शेन। वाह्यम्। मूद्गार्। निवेष्यम्। निवर्धेन। स्तनयितुं। मस्ति
 र्धेण। श्पशानिम्। कनीनकाभ्याम्। विद्युतं। कर्णभ्याम्। प्रो
 त्रम्। प्रोत्राभ्याम्। कर्ण१० श्पधरकएहेन। तेदनीम्। शुष्कक
 एहेन। श्पपः। मन्याभिः। चिन्। श्रीषर्ण। श्पदिनिम्। निर्जत्मे
 न। श्रीषर्ण। निर्जृतिम्। सिङ्गोशैः। प्राणान्। स्तुपेन। रेषाण२
 पदार्थः - १ प्राणसे२ वायुकोत्तमकरता हं ५, ६ नीचे के होठ से उपयामदेव
 पुरुषकीनासाछिद्रकोत्तमकरता हं ५, ६ नीचे के होठ से उपयामदेव
 नाकोत्तमकरता हं ८ ऊपर के होठ से ९ सत्नामदेवताकोत्तमकरता
 हं १० ऊपर के श्पर्द्धशरीरकीकांतिसे ११ श्पन्तरदेवताकोत्तमकरता हं
 १२ नीचे के श्पर्द्धशरीरकीकांतिसे १३ वाह्यदेवताकोत्तमकरता हं १४
 मस्तकसे १५ प्रवेशयोग्यपरमात्माकोत्तमकरता हं १६ शिरके श्पस्थि
 में लगेमज्जाभाग श्पयवानिर्विज्रयोगाभ्याससे १७ स्तनयितुं देवता
 वादशानाहतशब्दकोत्तमकरता हं १८ शिरमें स्थितजर्जरमांसभाग
 श्पयवामस्तकगतप्राणसे १९ श्पशानिदेवतावाब्रह्मप्रकाशकोत्तम
 करता हं २० श्पारवकीपुनलियोंसे २१ विद्युतदेवतावाब्रह्मशक्तिको

तमकरता हं २२ कानों से २३ समष्टि ओव को तम करता हं २४ ओव इन्द्रियों से २५ समष्टि कानों को तम करता हं २६ कंठ के अर्धो भाग से २७ तेदनी देवता को तम करता हं २८ निर्मास कंठ देश से २९ जल देवताओं को तम करता हं ३० ग्रीवा की पिच्छली नाड़ियों से ३१ समष्टि चित्त को तम करता हं ३२ शिर वा मानस सूर्य से ३३ परा शक्ति को तम करता हं ३४ ३५ जर्जरी रूपा शिरो भाग वा योग पुष्टि रहित मानस सूर्य से ३६ मृत्यु भार्या को तम करता हं ३७ शब्द युक्त अंगों वा अनाहत शब्दों से ३८ माणों को तम करता हं ३९ ऊंचे शिर वा रूप अंग से ४० रेष्मा देवता वा अनाहत शब्द से युक्त ब्रह्मज्योति को तम करता हं ॥ २ ॥

मश कान्के शेरिन्द्रं स्वप्सावहेन वहस्पतिं
शकुनिसादेन कुर्मज्जैराकर्मणां स्थूराभ्या
मृक्षलाभिः कपिज्जलान् वज्रहुंभ्यामध्वानभ्या
हभ्याज्जाभीलेनारण्यमग्निमिति रुग्भ्यामृषणां
न्दोभ्यामश्विना वंसाभ्यां रुद्रं रोराभ्यामृ
केशैः मश कान् स्वप्सा वहेन इन्द्रं शकुनिसादेन वह
स्पतिं शफैः कूर्मान् स्थूराभ्यामशार्कमणं मृक्षला
भिः कपिज्जलान् जुह्वाभ्यामजवम् वाहभ्यामध्वान
नां जाध्वीलेनारण्यमग्निमिति रुग्भ्यामग्निमिति
दोभ्यामृषणां असाभ्यामश्विनो रोगाभ्यामरुद्रम् ॥ ३ ॥

पदार्थः - १ केशों से २ मशक देवता वा गगन में घों को तम करता हं ३ शुभकर्मकर्ता ४ स्कंध देश से इन्द्र देवता को तम करता हं ५ जीवात्मके अन्वराण से ७ गुरु को तम करता हं ८ अश्व के रुर वा मानस सूर्य के शमनिवृत्ति के फलों से ९ कूर्म देवता वा माणों को तम करता हं १० गु-

[OrderDescription]
,CREATED=13.12.19 15:26
,TRANSFERRED=2019/12/13 at 15:34:37
,PAGES=43
,TYPE=STD
,NAME=S0002339
,Book Name=M-2249-SHRISUKAL YAJUVED BRAHAMBHASYA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF

FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF

FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,